बंगाल की पहेलियाँ - एक अध्ययन

एम. ए. परीक्षार्थ प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

प्रस्तुत कर्त्री

कल्पना मुखर्जी

आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्तर

१९८०

निर्देशक

डा. कर्ण. राजशेषगिरि राव

आचार्य एवं अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्तर

बंगाल प्रहेलिकाएँ एक अध्ययन

(एम० ए० उपाधि केलिए प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध)

आन्ध्र विश्वविद्यालय

1980

प्रस्तुत कर्त्री

श्रीमति कल्पना मुखर्जी

= = =

निर्देशक

डॉ० कर्ण [illegible] राव

एवं अध्यक्ष

हिन्दी विभाग

आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेर

* * * * * *

प्र स्ता व ना

- - - - - - - - - - -
- - - - - - - - - -
= = = =
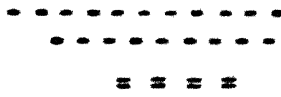
लोक साहित्य का सर्वाधिक महत्व सामान्य जीवन के सर्वांगीण सत्य का उद्घाटन करना है। किसी देश या जाति के जीवन में उसके लोक साहित्य का एकाधिक दृष्टियों से विशेष महत्व है। हम जानते हैं कि इसके मौखिक स्वरूप के कारण इसमें अनेक विषय अक्षुण्ण रहते हैं। जिनका कि शिष्ट साहित्य में लोप हो जाता है। लोक साहित्य अपने व्यापक परिवेश में देश के जीवन की धार्मिक, सामाजिक तथा सदाचार संबंधी विशेषताओं को सुरक्षित रखता है। साथ ही इस में स्थानीय इतिहास, भूगोल संबंधी विशेषतायें तथा इनके संबन्द्द सामग्री भी सुरक्षित रहती है। भाषा वैज्ञानिकों के सूक्ष्म विवेचन, विश्लेषण से लोक साहित्य में बहुमूल्य जानकारी प्रकाश में आती है।

लोकसाहित्य के अध्ययन से राष्ट्रीय एकता को भी प्रश्रय मिलता ही है साथ ही भाषा और साहित्य को भी अशेष लाभ पहुंचता है। प्रत्येक देश की संस्कृति का मूल और अविकृत रूप वहां के लोक साहित्य में सुरक्षित रहता है। भारतीय लोकसाहित्य में भी भारतीय संस्कृति में बिखरे अनन्त लोकाचारों, संस्कारों एवं परम्परागत विचारों की अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक रूप में हुई है।

सभी भाषाओं के लोकसाहित्य के पांच भेद माने जाते हैं

1. लोक गीत   2. लोक कथा

3. लोक गाथा   4. लोकनाट्य

5. प्रकीर्ण साहित्य ।

1) लोक गीत : लोकजीवन की वास्तविक अनुभूतियों को प्रस्तुत करता है।

2) लोक कथा : लोक साहित्य में लोकगीतों के बाद लोक कथाओं का स्थान आता है। लोक कथाओं में लोकजीवन की सब प्रकार की भावनाएं पारम्पराएं तथा जीवन दर्शन समाहित है।

3) लोक गाथा : दीर्घ कथात्मक गीत होती है। तथा कथानक प्रधान होती है।

4) लोक नाट्य : इसका जनजीवन में एक विशेष महत्व है। बंगला लोकनाट्य परम्परा का मूलस्रोत जननाट्य ही है।

5) प्रकीर्ण साहित्य : प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत - लोकोक्तियां, मुहावरें पहेलियां आदि समाहित हैं। लोक साहित्य में प्रयुक्त 'लोक' शब्द - सारपूर्ण मुहावरों, तथा लोकोक्तियों के द्वारा ही 'बंगला साहित्य' अधिक समृध्द शाली और अभिव्यक्ति पूर्ण हुआ है। लोकोक्तियां बंगाल के लोक मानस की अंतर्निहित निधियां है, जो समय समय पर अनायास ही

प्रकट हो जाती है। लोकोक्तियाँ के समान ही मुहावरों का प्रयोग भी जनजीवन में निरंतर होता रहता है। मुहावरा - भाषा में प्रयुक्त अपूर्ण वाक्य खंड है जहाँ लोकोक्ति में पूर्ण सत्य के विचार की अभिव्यक्ति है। लोक जीवन में मनोरंजन के विविध साधनों में पहेलियों का भी विशिष्ट स्थान है। बंगला पहेलियों के द्वारा ज्ञान की श्री वृध्दि होती है तथा कल्पनाशक्ति की उर्वरता बढती है।

बंगला लोकसाहित्य लोक जीवन की अनुपम सम्पत्ति है। बंगला लोकसाहित्य में बंगला पहेलियों का विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि बंगला पहेलियाँ लोक जीवन की अत्यंत लोकप्रिय विधा है, जो लोकमनोविनोद एवं मनोविकास के साधन है। मेरे इस लघु - शोध प्रबंध में मैं बंगला पहेलियों का विवेचन एवं विश्लेषण करने का विनम्र प्रयास किया गया है।

अध्ययन की सुविधा के लिए यह प्रबंध आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में विषय - प्रवेश के अन्तर्गत लोकसाहित्य का विवेचन किया गया है। द्वितीय अध्याय में अन्तर्गत पहेली की परिभाषा देकर उसके महत्व तथा तत्वों का विचार - विमर्श किया गया है। तृतीय अध्याय में पहेली परम्परा का ऐतिहासिक विवेचन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रहेलिकाओं के विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय में वर्ण्यविषय के अंतर्गत प्रहेलिकाओं का अध्ययन

किया गया है। षष्ठ अध्याय में बंगला, हिन्दी, मलयालम, तेलुगु तथा भोजपुरी पहेलियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सप्तम अध्याय में पहेलियों की शिल्प विधा का विवेचन किया गया है। अष्टम अध्याय में निष्कर्ष के अन्तर्गत अध्ययन का सार संक्षेप में दिया गया है।

प्रो० श्री वर्मा राजशेषगिरि राव, अध्यक्ष हिन्दी विभाग के प्रति मैं अत्यंत कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस विषय पर काम करने की अनुमति दी है। डा० शेषगिरि राव जी के तत्वावधान में ही यह शोध - कार्य संपन्न हुआ है। अतः उनके प्रति मैं अपनी सविनय कृतज्ञता का ज्ञापन करती हूँ। आशा है कि लोकसाहित्य मर्मज्ञ मेरी इस कृति का अनुमोदन करेंगे, और मुझे आशीर्वाद देकर प्रोत्साहन प्रदान करेंगे।

आपकी विनीता

(कल्पना मुखर्जी)

विषय - सूची

* * *

प्रथम अध्याय

लोक साहित्य का संक्षिप्त विवेचन

पहला अध्याय

लोक साहित्य का संक्षिप्त विवेचन

= = = = = = = = = = = = = = =

लोक साहित्य क्या है?

संसार अनेक वस्तुओं से बना है। संसार में मानव एक अंग है और उनका जीवन अनेक समस्याओं से भराहुआ है। रात दिन की तरह जीवन में सुख दुःख, अनुराग - विराग और आकर्षन - विकर्षण आदि द्वन्द रूप में हैं। हर एक वस्तु और जीव में इन द्वन्द का रूप स्पष्ट क है। इसीलिये इन द्वन्दों का समन्वय ही जीवन है। मानव जीवन का प्रतिबिंब ही साहित्य है। साहित्य दो प्रकार के हैं जैसे - - - -

(1) लोक साहित्य

(2) शिष्ट साहित्य

एक समय था जब संसार के समस्त देशों में मानव देवी के उपासक थे, तथा प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते थे। उस समय उन का आचार - विचार, रहन - सहन, सरल - सहज तथा स्वाभाविक था। वे आडम्बर तथा कृत्तिमता से कोसों दूर रहते हैं। वे स्वाभाविकता की ब गोद में पले हुये जीव थे। उनके समस्त क्रिया - कलाप - उठना, बैठना, हंसना, बोलना स्वाभाविकता से पगे रहते थे। चित्त के आह्लाद के लिए, मन में अनुरंजन के लिए साहित्य कीरचना उस समय भी होती थी और आज भी होती है, परंतु दोनों

युगों के साहित्य में जमीन आसमान का अंतर है। आज का साहित्य अनेक रूढ़ियों, वादों से जकड़ा हुआ है। अलंकार के भार से यह बोझिल है। कथाओं में अनेक शिल्पों का ध्यान रखना पड़ता है। नाटकों की रचना में अनेक नाटकीय नियमों का पालन करना पड़ता है। परंतु उस युग के साहित्य का प्रधान गुण था स्वाभाविकता, स्वच्छंदता तथा सरलता। वह साहित्य उतना ही स्वाभाविक था, जितना कि जंगल में खिलने वाले फूल, उतना ही स्वच्छन्द था जितना कि आकाश में विचरने वाली चिड़िया, उतना ही सरल तथा पवित्र जितना की गंगा की निर्मल धारा, उस समय के साहित्य का जो अंश अवशिष्ट तथा सुरक्षित रह गया है, वही लोक साहित्य है।

लोक साहित्य की परिभाषा :

यद्यपि लोकसाहित्य को परिभाषा में बाँधना कोई आसान कार्य नहीं है फिर भी विद्वानों ने उन्हें परिभाषाओं में बाँधने का प्रयत्न किया है : - - -

सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली, अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है, उसकी आशा - निराशा, हर्ष - विषाद, जीवन - मरण, लाभ - हानि, सुख - दुःख आदि अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है उसे ही लोक साहित्य कहते हैं। इसलिए लोकसाहित्य के विषय में, यह कहा गया है - - -

'दा पोयेट्री आफ दि पिपुल्स, बाई दा पिपुल, फर दा पिपुल'

डा० सत्येंद्र द्वारा दी गई परिभाषा

लोक साहित्य के अन्तर्गत वह समस्त बोली या भाषागत अभिव्यक्ति आती है जिसमें (क) आदिम मानव के अवशेष उपलब्ध हो (ख) परम्परागत मौखिक क्रम से उपलब्ध या भाषागत अभिव्यक्ति हो जिसे किसी की कृति न कहा जा सके, जिसे श्रुत ही माना जाता हो और जो लोकमानस की वृत्ति में समाई हुई हो (ग) कृतित्व हो किन्तु वह लोकमानस के सामान्य तत्वों से युक्त हो कि उसे किसी व्यक्तित्व के साथ संबंध रखते हुये भी लोक उसे अपने ही व्यक्तित्व की कृति स्वीकार करें।

पढ़े लिखे लोगों की और सभ्य लोगों की संपदा ही शिष्ट साहित्य है। लोक साहित्य में ही हमारी सम्पत्ति सुरक्षित है। लोक और शिष्ट साहित्य से ही हमारा साहित्य परिपूर्ण है।

साहित्य का अर्थ :

यों तो साहित्य का अर्थ है - - 'हितेन सह सहितम्' इस प्रकार
साहित्य का अभिधान हित भावको लेकर साहित्य
भावं साहित्यम्' हुआ है, इसका दूसरा अर्थ है - साहित्य का उद्देश्य भावुक को अपने साथ ले चलने में है, अर्थात् उसका नेतृत्व करने में है।

साहित्य शब्द 'लिट्रेचर' के स्थान पर प्रयुक्त होता है, द्विवेदी जी ने साहित्य को - 'समाज का दर्पण' और ज्ञानराशि का संचित कोष' कहा है। आचार्य ने साहित्य को जीवन से 'अभिन्न' माना है। किसी ने साहित्य को 'जीवन की समीक्षा' कहा है। किसी ने उसे 'जीवन

की अभिव्यक्ति' बताया। भर्तृहरि ने साहित्य शब्द का प्रयोग 'काव्य' के अर्थ में किया है।

रामचन्द्र शुक्ल का कथन है - 'प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब है। इसलिये जनता की चित्त-वृत्ति के परिवर्तन के साथ साथ साहित्य के स्वरूप में भी परिवर्तन होता है।

'लोक' शब्द की व्युत्पत्ति :

'लोक शब्द अंग्रेजी में 'फोक' के स्थान में प्रयुक्त होता है। 'लोक' शब्द संस्कृत के 'लोकृ दर्शने' धातु से 'घञ्' प्रत्यय जोड़ने पर निष्पन्न हुआ है, 'लोक धातु' का अर्थ देखना है, अतः लोक का अर्थ है 'देखने-वाला' और लोक शब्द अत्यंत प्राचीन शब्द है। 'ऋग्वेद' में 'लोक शब्द के लिये 'जन' का भी प्रयोग हुआ है। इसलिये लोक का अर्थ है - जनता का आचार, व्यवहार, एवं आदर्श।

डा0 हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन है कि 'लोक ' शब्द का अर्थ - 'जनपद' या ग्राम्य' नहीं है। बल्कि नगरों एवं गाँवों में फैली हुई वह समूची जनता है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है।

डा0 कुंजबिहारी दास का कथन है कि - 'लोक गीत' उन लोगों के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक अभिव्यक्ति है जो सुसंस्कृत तथा सुसभ्य प्रभावों से बाहर रह कर कम या अधिक रूप में, आदिम अवस्था में निवास करते हैं, इन्हीं लोगों के साहित्य को 'लोकसाहित्य' कहा जाता है। यह

'लोक साहित्य' परंपरानुगत और मौखिक रूप में होता है।

लोक के स्थान पर 'जन' शब्द :

'लोक साहित्य' शब्द का प्रयोग अब हिन्दी में रूढ़ सा हो चला है। कुछ विद्वानों ने लोक साहित्य और 'जनसाहित्य' में पर्याप्त भेद दिखलाने का प्रयत्न किया है। 'लोकसाहित्य' जहाँ जनता के लिये जनता ही द्वारा रचित साहित्य है पर 'जनसाहित्य' जनता के लिये व्यक्ति द्वारा रचित साहित्य है। प्रत्येक प्रकारका साहित्य जनसाहित्य नहीं हो सकता। जन या लोक शब्द मानव सभ्यता के विकास की एक अवस्था सूचित करते हैं। वस्तु की दृष्टि से भी दोनों एक ही है। 'लोक शब्द अधिक व्यापक होने के कारण हमारा सम्पूर्ण जीवन इसमें समा जाता है।

'जनशब्द' की प्राचीनता का ऐतिहासिक आधार है। संस्कृत एवं पालि ग्रंथों में इस शब्द से मानव समाज का बोध कराया गया है। बुध्द के उपदेश - 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' होते थे। जनशब्द की प्राचीनता आर्य जाति के इतिहास से संबंध है। बाद में 'जनसाहित्य' 'जननाटक' आदि रूपों से उद्भव और विकास हुआ।

यद्यपी लेखकों ने समय समय पर अन्य शब्दों का भी प्रयोग किया, पर 'लोक शब्द' ही अधिक प्रयुक्त होने लगा।

लोक साहित्य की महत्ता के विषय में कुछ विशिष्ट विद्वानों के मत :

संसार के अनेक विद्वानों ने लोक साहित्य की उपादेयता से आकृष्ट होकर इसकीमहत्ता पर विभिन्न दृष्टियों से प्रकाश डाला है :

(1) संसार की समस्त कथासाहित्य का प्रादुर्भाव लोककहानियों से हुआ है तथा समस्त विशिष्ट काव्य का प्रादुर्भाव लोकगीतों से मानते हैं।

(2) लोक साहित्य व्यक्तिगत या सामूहिक तीव्र भावों का प्रकाशन है। लोककविता और लोक कथायों का स्रोत/राष्ट्रीय जीवन के अंतरतम से निसृत होता है। इन गीतों में जनता का हृदय संपूर्ण रूप से झांकता है।

(3) यदि किसी मनुष्य को समस्त लोक गीत की रचना का अधिकार मिल जायें तो उसे इस बात की चिंता करने की आवश्यकता नहीं कि इस देश के कानून को कौन बनाता है?

(4) राष्ट्रीय गीत तथा गाथायों में किसी प्रकार का मिश्रण नहीं होता। ये एक निश्चित स्रोत से निकल कर प्रवाहित होती है।

(5) लोकथायों में वास्तविक जीवन का सटीक चित्रण मिलता है, अतएव भूतकालीन जीवन दर्शन के विषय में इनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

(6) लोकगीत उस खान के समान है, जिसके खोदने का काम अभी प्रारंभ ही नहीं हुआ है, यदि इन गीतों का प्रकाशन किया जाये तो ऐसी बहुमूल्य सामग्री प्रकाश में आयेगी जिससे भाषा संबंधी अनेक समस्यायें सुलझायी जा सकती है।

(7) लोक गाथायें स्वतंत्र होती है तथा खुली हवा की तरह ताजी होती है क्योंकि जनसमूह की भाषा गोपनीयता को प्रश्रय नहीं

देती। वे जैसा देखती है और जैसा अनुभव करती है उसका कथन स्वाभाविक भाषा और शैली के माध्यम से कर देती है।

(8) लोकगीत केवल इसलिये महत्वपूर्ण नहीं है कि उनका, संगीत, स्वरूप और तथ्यविषय जनता के जीवन का अंगीभूत बन गया है, प्रत्युत उनकी महत्ता इससे भी अधिक है। इन मनोरम गीतों में, इन व्यवस्थित एवं प्रशिक्षित लेखा पत्रों में हमें मानव विज्ञान संबंधी तथ्यों की प्रमाणीभूत सामग्री उपलब्ध होती है। मानव विज्ञानवेत्ता को अपने सिद्धान्तों की सत्यता प्रमाणित करने के लिये लोकगीतों को छोड़कर कोई दूसरा सच्चा एवं विश्वासपात्र साक्षी उपलब्ध नहीं हो सकता।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचन और विद्वानों के मन्तव्यों से स्पष्ट है कि लोकसाहित्य के अध्ययन का महत्व बहुमुखी है।

बंगाल तथा बंगाली :

यों तो सभी भाषायों में पाई जानेवाली लोकसाहित्य प्रायः एक सा ही होता है, फिर भी बंगाल के 'लोकसाहित्य को जानने के लिये वहाँ की प्राकृतिक स्थिति को भी जानना आवश्यक है। बंगाल भारत की पूर्व दिशा में स्थित है। स्वाधीनता के पूर्व बंगाल का क्षेत्र विशाल था वर्तमान काल में बंगाल का पूर्वी भाग - बंगलादेश तथा पश्चिमी भाग - पश्चिमी बंगाल के नाम से अभिहित किया जाता है और यह भारत के अंतर्भुक्त है। बंगाल की उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत तथा दक्षिणी भाग में बंगाल की खाड़ी है। बंगाल के बीच से होकर बहुत सारी बड़ी बड़ी नदियाँ बहती है - जैसे गंगा, (भागीरथी नाम लेकर) ब्रह्मपुत्र, मेघना

आदि। इसके अलावा और कई छोटी छोटी नदियाँ भी है। यहाँ की प्राकृतिक सोन्दर्य मन तथा नेत्र को सुख देने वाला है। यहाँ की वर्तमान जनसंख्या एक जाति या परिवार से नहीं बना है, विभिन्न जातियों के नाम इस प्रकार है - - 'प्राक - आष्ट्रलायड, मंगोलियन, आरमीयन, अल्पाईन और नार्डिक। प्रागैतिहासिक युग में जो भी यहाँ आये वहीं बस गये और अपना अपना सांस्कृतिक विकास करने लगे नृ - शास्त्रों के अनुसार 'निग्रिटे' जाति ही सबसे पुरानी है जो लोग अभी भी भारत में नजर आते हैं।

बंगाली आदिवासी जातियों में -मुंडा, बाऊरी, बाग्दी, माल, सांवताल, ओरावो, बोडो, भूटानी, आदि उल्लेखनीय है।

(1)नीग्रो लोग सर्वप्रथम वरगद के वृक्ष की पूजा करने लगे

(2) मुंडा जाति के लोग पहले पहल घुमक्कड़ जीवन बिताते थे वर्तमान युग में यही खेती बारी करने की आदत में है। ये लोग ग्राम देवताओं की पूजा अर्थात् पुरोहित गिरि भी करते है। ग्रीष्मकाल में पानी के लिये 'सूर्यदेवता' की पूजा करते हैं। उस समय एक तरह का नृत्य करते है जिसे 'बाऊनृत्य' कहते हैं।

(3) सांवताल - ये लोग खेती बारी करते हैं। सांवताल नृत्य बंगाल का एक विशेष नृत्य माना जाता है। ये संगीत और नृत्य के प्रेमी है ये अपने 'पितरों' तथा 'सूर्यदेवता' और 'सिंबोंगा' की पूजा करते हैं।

(4) प्राक - आष्ट्या - गोष्टी के लोग भूमध्य रेखा के आसपास रहते है। ये लोग एक साथ बैठकर खाना - पीना, एक गोत्र से दूसरे गोत्र में

शादी या विवाह सम्पन्न करते हैं।

(5) भूटानी - ये लोग अपनी संस्कृत को बंगाल में लाये

(6) बोडो - जो कि 'इन्डोमंगोलियन' हैं वे लोग सिल्क, चाय, सुपाड़ी, बेरी आदि के उत्पादन में लगे रहते हैं।

(7) डोम - मुर्दा को जलाने वाले 'डोम' जाति की भी परंपरा है, यद्यपि वर्तमान समाज में उनका कोई मूल्य नहीं दिया जाता, पालवंश के राज्यकाल में ये बहुत उच्च अवस्था में थे। उनके साहसिक कार्य का उल्लेख आज भी लोकगीतों में मिलता है।

(8) बाऊड़ी - प्राक - अष्ट्रोलिया जाति के लोग हैं, वे साँप की पूजा करते हैं। विधवा - विवाह तथा विवाह - विच्छेद भी उनके समाज में प्रचलित हैं।

(9) बाग्दी - ये लोग भी साँप की पूजा करते हैं ये बहुत साहसी होते हैं।

(10) माल - ये द्रविड परिवार की जाति के लोग है। ये 'सपेरे' हैं और मैड़िये का धंधा करते हैं। तथा 'मानसादेवी की पूजा' करते हैं। उनके अनुसार 'लोकगीत' में कोई गलती करने पर, 'मनसा देवी' अभिशाप देगी।

(11) हान्दिरा - ये लोग झाडू देते हैं तथा गन्दगी साफ करने का काम करते हैं, इसके अलावा 'पालकी' ढोने के गीत गाते हैं। खजूर का रस भी निकालते हैं।

(12) कोच - 'इन्डो मंगोलीय' जाति के लोग हैं, ये भी आदि वासियों में एक जाति के लोग हैं। अभी आसाम में यह जाति मिलती है।

(13) नमसूद्र - यह जाति सबसे अधिक संख्या में अवस्थित है। इस जाति के लोग अधिकतर बंगला देश से आये हुये हैं और पश्चिम बंगाल में स्वतंत्र रूप से बस गये हैं। ये बहुत ही परिश्रमी हैं। 'हैं नव गोष्ठी' में भी ये आते हैं, पश्चिम बंगाल में जितने भी मुसलमान हैं अधिकतर इन्हीं जातियों से उनकी उत्पत्ति मानते हैं, मुसलमान समाज के उच्चस्तर के लोगों का तथा नीचे स्तर के लोग, पीर लोगों का अनुसरण करते हैं।

(::) :: (::)

दूसरा अध्याय

पहेली

व्युत्पत्ति, महत्व एवं तत्व

द्वितीय अध्याय

पहेली : व्युत्पत्ति, महत्व एवं तत्व

परिचय :

साहित्य मानव जीवन का दर्पण है, लोकसाहित्य जनजीवन का दर्पण है, सर्वसाधारण जनता जो कुछ सोचती है, जिन भावों की अनुभूति करती है उसी का प्रकाशन उनके साहित्य में उपलब्ध होता है। ग्रामीण लोग विभिन्न संस्कारों के अवसर पर तथा विभिन्न ऋतुओं में लोकगीत गा गा कर अपना मनोरंजन करते हैं। कहानियाँ सुनना तथा सुनाना, उनके मनबहलाव का अनन्य साधन है, समय समय पर चुभती हुई लोकोक्तियाँ तथा भावभरे मुहावरे और पहेलियों का प्रयोग कर बंगाल में गाँवों के निवासी अपने हृदयगत भावों या विचारों का प्रकाशन करते हैं। इस में लोकमानस की अनुभूतियाँ, अनुराग - विरागों सुख दुखों का प्रतिविम्ब रहता है। जनता के अनुभवों पर आधृत कुछ सुक्तियों में ऐसी अनुभूतियाँ उपलब्ध होती हैं जो अन्यत्र नहीं पाई जा सकती। जन जीवन से संबंधित नाटकों को देखने के लिये जनता की जो अपार भीड़ एकत्र होती है वह उनकी लोकप्रियता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। बंगाल के लोक साहित्य को निम्न पाँच भागों में विभाजित किया जा सकता है :

(1) लोक गीत

(2) लोकगाथा

(3) लोककथा

(4) लोकनाट्य

(5) लोक सुभाषित या प्रकीर्ण

(लोकोक्तियां, मुहावरे, कहावतें, पहेलियां, आदि प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत आते हैं)

(1) लोकगीत :

बंगाला लोकसाहित्य में लोकगीतों का प्रमुख स्थान है। इन गीतों में भाव के साथ संगीत और नृत्य के तत्व भी मिले हैं। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह मौखिक परंपरा से जीवित रहते हैं। फलतः प्रत्येक नवीन गायक की अभिरुचि के अनुसार उसका स्वरूप निरंतर बदलता रहता है। रचना - शैली के आधार पर बंगाल के लोकगीत को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं - - -

(1) प्रबंधात्मक

(2) मुक्तक

बंगाली लोक जीवन के सभी अवसरों पर गानों का आश्रय लेकर अपनी तृप्ति करता है। बंगला लोकगीत विभिन्न ऋतुओं में तथा संस्कारों के अवसर पर गाये जाते हैं। वस्तुतः इसके पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण जरूर रहता है वह है विभिन्न कार्य करते समय परिश्रमजन्य थकान से मुक्ति पाने के लिये तथा कार्य की कठिनता एवं नीरसता को कुछ सीमातक कम करने केलिये कुछ गीत गाये जाते हैं। बंगला लोकगीतों कोकुछ श्रेणियों में विभजित किया जा सकता है जैसे ; - - -

(अ) संस्कारों की दृष्टि से (आ) रसानुभुति की प्रणाली से (इ) ऋतुओं तथा व्रतों के क्रम से (ई) विभिन्न जातियों के अनुसार तथा (उ) श्रम के आधार पर।

(अ) संस्कारों की दृष्टि से विभाजन : भारतीय शास्त्रों में षोड़श संस्कारों का विधान है जो संभवतः विश्व की किसी भी जपति में न मिलेगी, इन षोडश संस्कारों में गर्भाधान, पुत्र जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत विवाह और मृत्यु के प्रधानता प्राप्त है। आजकल बंगाल में केवल पांच संस्कारों का ही संपादन मुख्य रूप से होता है। बंगाल की जनता इन अवसरों पर गीत गाने को मंगल सूचक मानते हैं। यद्यपि दृष्टिकोण की वृद्धि के कारण इनमें कुछ कमी जरुर आ गई है फिर भी बड़ी बड़ी महानगरी में संस्कारों के अवसर पर गीत गाने की प्रथा है। विभिन्न संस्कारों के अवसर बंगाली स्त्रियाँ अपने कोमल कंठ से गीत गा गा कर जन मन का प्रसादन करती है। बंगाली लोकगीत की विशेषता यह है कि इसके स्वर अवसर के अनुकूल बदलते रहते है, विवाह तथा पुत्र जन्म पर गाये जानेवाले गीतों में आनंद झलकता है पर पुत्री विदाई के गीतों में करुणा झलकती है।

(आ) रसानुभुति की प्रणाली से विभाजन : बंगला लोकगीत भावों से भरपूर होते है क्योंकि जनसामान्य के हृदयगत भाव आडंबर हीन होते हैं। इसी कारण से बंगला लोकगीतों में रसानुभुति की क्षमता अत्यधिक होती है। बंगला लोकगीतों में विभिन्न रसों की जो अविरल धारा प्रवाहित होती है उसका ओज कदापि सूखनहीं सकता। बंगला लोक

गीतों में निम्न पाँच रसों ी प्रधानता हो ी है। जैसे - - -

(1) श्रृंगार

(2) करुण

(3) वीर

(4) हास्य

(5) शांत।

इन गीतों में श्रृंगार, करुण और वीर की तुलना में हास्य रस की मात्रा अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। विवाह संबंधी कुछ गीतों में हास्य रस की उत्कृष्ट व्यंजना होती है। बारातियों के भोजन करते समय लड़की के पक्ष वाले मीठी मीठी गालियां सुनने के लिये और भी विलंब से भोजन कराते हैं। वैवाहिक परिहास के गीतों में हास्यरस की मधुर व्यंजना मिलती है।

(ङ) ऋतुओं तथा व्रतों के क्रम से विभाजन - वर्षा ऋतु का ग्रामीण जीवन में कई दृष्टियों से विशेष महत्व होता है। बंगाल में ग्रामीण समाज का समग्र आर्थिक ढांचा वर्षा के उपर निर्भर करता है। वर्षा, वसंत आदि ऋतुओं की प्रतीक्षा लोकमानस बड़ी अधीरता से करता है। अतः वर्षा आदि के आते ही बंगाल के ग्रामीण कृषकों के हृदय के उद्गार फूट पड़ते है।

बंगाल के लोक जीवन में व्रतों का बहुत महत्व होता है। इन

व्रतों के अवसर पर बंगाल की स्त्रियाँ अपने कोमल कंठों से विभिन्न प्रकार के गीत गाती हैं। कुछ गीतों में व्रत की माहात्म्य तथा उससे प्राप्त होने वाले फलों का बड़ा ही सटीक वर्णन होता है।

(ई) विभिन्न जातियों के गीत : यों तो लोकगीति सामान्यतः किसी क्षेत्र विशेष के अनुसार ही प्रचलित होते हैं फिर भी कुछ गीत ऐसे होते हैं जो किसी क्षेत्र विशेष की जाति विशेष मे ही गाये जाते हैं। उदाहरणार्थ - बंगाल की 'पल्लीगीति' को लिया जा सकता है यह अत्यंत प्रसिद्ध गीत है पर माँझी या मल्लाह जो कि नाव चलाता है उनके गले में यह गीत अच्छा जमता है। ये लोग जिस लय और भाव भंगिमा के साथ गाते हैं संभवतः दूसरा कोई नहीं गा सकता। उसी तरह से भिक्षावृत्ति करनेवालों का का बाउलगान' तथा ' कीर्तन' करनेवालों का कीर्तन गानें भी उन्हीं जाति के गले में अच्छा लगता है। 'झुमुर गान' 'भादुगान' कीर्तन गंभीरा आदि और कई गीत है।

(उ) श्रम के आधार पर विभाजन : गीतों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता है। यही कारण है कि बंगाल के लोग कुछ विशेष प्रकार के गीत प्रायः कार्य विशेष को करते समय या नीरस कार्य करते समय प्रायः श्रम में एकरूपता बनाये रखने के लिए गीत गाते हैं । बंगाल के कृषक खेत में बीज बोते समय 'वपोन गीत' धान से चावल निकालते समय - धान भाड़ानोर गान गीत गाते हैं, जोता चलाते समय - जन्तसार गीत आदि को गाते हैं। छत पीटते समय बंगाली स्त्रियाँ 'छात

पिटानीर गान' गीत गाती हैं।

(2) लोकगाथा :

ये कथात्मक प्रधान गीत होते है। कथा को साथ में लिये रहने के कारण आकार भी बहुत लंबी होती है इसकी लोकप्रियता अत्यधिक होती है। ये गाथायें कभी कभी इतनी लंबी होती हैं कि एक रात में समाप्त नही होती बल्कि दो, तीनरात में समाप्त होती है। जनता भी इसे बड़े चाव से सुनते हैं। बंगाल की लोक गाथायें अपने में कुछ विशेषतायें लिये रहती है जैसे - - - (1) अज्ञात रचनाकार (2) प्रामाणिक मूल पाठ की कमी (3) संगीत और नृत्य का साहचर्य और सहयोग (4) स्थानीयता की गंध (5) मौखिक परंपरा (6) अलंकृत शैली का अभाव (7) उपदेशात्मक प्रवृत्ति का अभाव (8) रचनाकार के व्यक्तित्व का अभाव (9) दीर्घ कथानक की विद्यमानता (10) टैक पदों की पुनरावृत्ति (11) इतिहास की संदिग्धता।बंगाल में 'बाउल' लोग अपनी स्वर साधना में विशेष वाद्य की सहायता लेकर जनमन का अनुरंजन करते है।

बंगला लोकसाहित्य में लोकगाथाओं का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बहुत सारी बंगला लोकगाथायों को अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है जो केवल हमारे देश में ही नहीं बाहर के देशों में भी प्रशंसा पा चुका है। बंगाल की लोक गाथायों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है जैसे - - -

(1) नाथ गाथा

(2) लौकिक गाथा

(1) नाथ गाथा : नाथ गाथाओं को सबसे पुरानी गाथा मानी जाती है। इसमें धार्मिक भावनायें दृष्टिगोचर होती है। नाथ गाथायों दो बातें मुख्य रूप से मिलती हैं। (1) गोरख नाथ का आदर्श चरित्र को लोगों के सामने उपस्थित करना गोरखनाथ जो कि नाथ कम्युनिटि के एक साधु थे। (2) दूसरा एक राजकुमार की कहानी है जो कि अपनी रानी माँ के आदेश पाकर संसार का त्याग कर देते है। ये गाथायें वीर रस प्रधान होते है तथा जनता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालनेवाला होता है।

(2) लौकिक गाथा : इसमें नार्थ बेंगल के कृषकों के जीवन संबंधी गाथायें है जैसे -- 'गोपीचांदेर गान' 'मैमनसिंह गीतिका' पूर्व बंगो गीतिका आदि।

(3) लोक कथा :

मौखिक कहानी के रूप में बंगाल की लोककहानी अत्यंत समृद्ध शाली है। बहुत सारी बंगला लोक कथों को अंग्रेजी में अनुवाद किया जा चुका है। लाल बिहारी दे, रवीन्द्रनाथ टैगोर, दक्षिणारंजन मित्र मजुमदार के समय में। उपेंद्रकिशोर राय चौधुरी ने कुछ जानवर संबंधी लोक कथायों का भी प्रकाशन किया है जैसे - 'टुनटुनीर बोई' इसके अलावा कई लोक कथायें इस प्रकार है - - -

(अ) परियों की कहानियाँ

(आ) ऐनिमैल टैल्स

(इ) रिचुयल अेल्स। आदि

परियों की कथा : इसे बंगला में 'रुपकथा' कहते है जिसका अर्थ है अविश्वास योग्य कहानी, रुपकथाओं के अंतर्गत अधिकतर देवता संबंधी कथाएं मिलती हैं। ये कथाएं दीर्घ होती है। इनमें अधिकतर दानव,- पशु परी तथा वन देवता संबंधी कथाएं रहती है। चरित्र नामविहीन रहता है जगह का नाम भी अस्पष्ट रहता है। पूरा कहानी साधारण जनता का मनोरंजन करती है। परियों की कहानियां सभी श्रेणियों के मनुष्य को आनन्द देता है। बंगाल की ग्रामीण जनता भाग्यवादी होती हैं। वे लोग भाग्य के उपर आस्था रखनेवाले है इन कथायों में भाग्य के बारे में भी विवरन मिलता है। इन कहानियों को सुनने से पुण्य मिलता है ऐसी धारणा है ग्रामवसियों की जिससे जीवन सफल होता है।

पशुओं की कथा : इन कथाओं में मनुष्य तथा पशुओं का चरित्र रुपकों के माध्यम से दिखाया गया है। इन कथाओं में रस भी रहता है। इन कथाओं में सबसे बडी बात यह होती है कि दुर्बल तथा सहायहीनों के लिये सहानुभूति रहती है। इन कथाओं से आदर्श तथा नीतिमूलक शिक्षा मिलती है। बंगाल की पशु कथाओं के साथ ब्रह्मदेश, मलेशिया तथा थाइलैंड का मेल रहता है।

धर्म अनुष्ठान कथा : ये कथाएँ अधिकतर बंगाल की स्त्रियों से सम्बंधित होता है। इन कथाओं में असंख्य साहित्यिक तथा ऐतिहासिक मूल्य रहता है। इन कथाओं को बंगला में 'ब्रतों कथा' कहते हैं। इनमें मन्त्र तंत्र भी हो सकता है। इन मंत्र तंत्र को धर्म अनुष्ठान के समय पर काम में लाया जाता है। स्त्रियों के विवाहित जीवन की आशा आकांक्षा, नम्रता कभी कभी अनुभूति की कटुता एवं कपटता का झलक भी मिलता है।

लोकनाट्य :

बंगाल की ग्रामीण जीवन संबंधी घटनाओं का उल्लेख इसमें रहता है। इनमें रामयण, महाभारत पुराण तथा मंगल काव्य से भी घटनाओं को लिया जाया है। इन लोकनाट्यों को बंगला में 'जात्रा' भी कहा जाता है। ये कई प्रकार के होते हैं। इन नाट्यों की विशेषता यह होती है कि यह खुले मंच पर खेला जाता है। बंगाल के कुछ लोक नाट्य इस प्रकार है :

(1) खनेर गान - खुली मंच पर खेला जाता है।

(2) पालातिया

(3) रंग पांचाल

(4) गंभीरार गान

(5) आलकाप

(6) कृष्णो जात्रा

(7) निशाँ जात्रा

(8) नल दमयंती जात्रा

(9) विद्या सुन्दर जात्रा

(10) राम जात्रा

(11) चौन्डी जात्रा

(12) भासाण जात्रा

(13) शिवरा जात्रा

(14) स्वदेशी जात्रा

इत्यादि लोकनाट्य के अंतर्गत आते हैं।

प्रकीर्ण :-

बंगाल की ग्रामीण जनता अपने दैनिक जीवन में अनेक प्रकार के लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग करते हैं जो साहित्य को सुन्दर बनाते हैं। इस दृष्टि से बंगाल के प्रकीर्ण तीन प्रकार के हैं - - -

(1) प्रोवाद

(2) लोकोक्ति

(3) धाँधा या कालिदास की हैयाली

(1) प्रोवाद : साधारण जनता अपने दैनिक जीवन में प्रोवादों का प्रयोग करते हैं। इससे भाषा की सुन्दरता बढ़ती है। प्रोवादों के माध्यम से हम वाक्य को संकुचित कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप मानलिजिये कि हम कहना यह चाहते है कि राम बहुत खुशी में है तो

हम यह कहेंगे कि 'राम ऐबौन' आगुनेर पाहाड़'। मान लीजिये बहुत दिनों आपका मित्र आप के घर में नहीं आता और अचानक एक दिन वह आप को रास्ते में मिल जाने पर आप कहेंगे कि - 'भाई तुमि आज काल डुमुरेर फूल होये गेछो'। अर्थात् डुमुर एक प्रकार का फूल होता है जो कि बहुत कम दिखाई पड़ता है। उसी प्रकार से आप का मित्र भी आजकल कम दिखाई पड़ने लगे हैं।

लोकोक्तियाँ :

ये भी प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत आती है। बंगाल की लोकोक्तियाँ चिरंतन अनुभुतियों की ज्ञानराशि है। इन लोकोक्तियों में मानव जीवन की अनुभुतियों का सार रहता है। बंगाल की लोकोक्तियों की शैली समासपूर्ण है ये आकार में छोटी होती है, परंतु इसमें विशाल भावराशि सिमटी रहती है। जैसे बंगला में एक लोकोक्ति है - - - 'नाचते ना जानले उठानेर दोष' इसी को हिन्दी में यों कहा जाता है - - - नाच न आवे आवे आँगन टेरा, अर्थात् जिसको नाचने को नहीं मालूम वह तो 'आँगन ठीक नहीं है, अतः मैं यहाँ नाच नहीं सकती' वह ऐसा कहेगी ही। ये बड़ी सरल भाषा में होती है और अपनी सरलता तथा सरसता के कारण सीधे हृदय को लगती है तथा ग्रामीण जनता के हृदय पर बहुत ही प्रभाव डालती हैं। बंगाल की लोकोक्तियों को कई भागों में विभाजित किया जा सकता है - - -

(1) स्थान संबंधी (2) जाति संबंधी

(3) प्रकृति संबंधी (4) पशु - पक्षी संबंधी

(5) प्रकीर्ण लोकोक्तियाँ

इनमें जाति संबंधी लोकोक्तियाँ अधिक है। प्रकृति तथा कृषि संबंधी लोकोक्तियों से मानव की निरीक्षण शक्ति का पता चलता है।

प्रहेलिकाएँ :

इनको बँगला में धाँधा या 'हेयाली' कहते हैं। ये मानव जाति के आरंभ में उत्पन्न हुई है। इनमें गोपनीयता, सांकेतिकता और प्रतीकात्मकता की प्रवृत्ति लक्षित होती है। ये वाणी विलास तथा बुध्दि परक होती हैं। बंगाल की पहेलियों में रस व्यंजना नहीं होती। ये मनोविज्ञान परक होती हैं। बंगाल की लोक जीवन से संबंधित सभी वस्तुओं के विषयों में पहेलियाँ विद्यमान हैं। इसमें हास्यरस की सृष्टि होती है। इसमें गणित के प्रश्न भी रहते हैं।

सभ्यता के प्रारंभिक काल में लोक पहेलियाँ कहना सुनना पसंद करते थे। वृध्द बालक तथा युवक सभी को ये आकर्षित करती हैं। इसमें काव्य सौन्दर्य की झलक भी होती है। जैसे अनुप्रास, रूपक आदि।

पहेली को संस्कृत भाषा में 'प्रहेलिका' कहा जाता है। संस्कृत में इसे 'आभाणक' तथा 'ब्रह्मोदय' नाम से अभिहित किया जाता है। तेलुगु में इसे 'पोडुपुकथा' तथा विच्चुकथा भी कहते हैं। मलयालम में 'कदम कथाये' 'तोलकथाये' अभिज्ञान कथाए' आदि नाम है। बंगला

में 'धांधा' या 'प्रौबाद' या 'हैयाली' कहते हैं।

मानव की प्रवृत्ति रहस्यात्मक है। जब मनुष्य यह चाहता है कि उसकी भाषा साधारण जनता न समझ सके तो वह ऐसी भाषा का प्रयोग करता है, जो जनसाधारण नहीं समझ पाते, यही पहली का रूप धारण कर लेती है। मनुष्य की यह गोपनीय प्रवृत्ति शायद प्राचीन काल से चली आ रही है और तभी से यह पहली की परंपरा भी आरंभ हुई होगी।

डा० फ्रेजर ने लिखा है कि पहेलियों की रचना उस समय हुई होगी जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी प्रकार की अड़चन पड़ती होगी।

एक अमेरिकन पं० डा० विलियम् थ्यूग जनसन् के अनुसार - - पहेली एक प्रश्न है जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष पूर्ण तथा अपूर्ण है जिससे प्रश्नकर्त्ता या प्रेषक श्रोता को ललकार देता है।

बंगला पहेली लोकमानस की अत्यंत प्राचीन अभिव्यक्ति है। लोक सुभाषित या प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत मुहावरे, लोकोक्तियां, सूक्तियां, पहेलियां, बच्चों के गीत पालने के गीत आदि सभी प्रकार के विषय का अन्तर्भाव किया जाता है।

वेदों में पहेलियों को 'ब्रह्मोदय' कहा गया है। धार्मिक यज्ञ - अनुष्ठानों में इसका पता चलता है। अश्वमेध यज्ञ में संस्कृत साहित्य में तो प्रहेलिकाओं की भरमार है। इसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है - -

अ) अन्तर्लापिका आ) बार्हर्लापिका

पहले वर्ग में उनका उत्तर अन्तर्निहित रहता है। दूसरे में उन का उत्तर बाहर से ढूंढकर देना पडता है जैसे कि नाम से ही उसका पता चलता है।

1) भारतीय साहित्य में प्रहेलिकायों का प्रभाव शिष्टसाहित्य पर लोकसाहित्य की अन्य विधायों से अधिक है। आदिम संस्कृति के अध्ययन के लिए पहेलियों का महत्त्व उल्लेखनीय है क्योंकि बंगला पहेली मनोरंजन एवं मनोविकास का साधन है।

2) पहेली लोककविता का अंग है। इसमें छंद, लय तथा तुक की प्रधानता रहती है। बंगला पहेलियों में अनुप्रास की बहुलता नजर आती है। लोकप्रिय छंदों का भी प्रयोग इसमें होता है।

3) बंगला भाषा में एक शब्दात्मक पहेलियाँ, अनेक वाक्यात्मक पहेलियाँ, कहीं कहीं गीत के रूप में मिलती है तथा कहीं कथात्मक रूप में भी मिलती है। बंगला में कथात्मक पहेलियाँ साधारणतः गीत और गद्य के रूप में मिलती है।

4) इन पहेलियों में धर्म, समाज एवं सदाचार संबंधी सामग्री भरी रहती है।

5) पहेलियों में लोकविश्वासों का प्रतिबिंब रहता है। इसमें लोक संस्कृति की झलक रहती है। बंगाल में कृषि संबंधी पहेलियों की अपेक्षा घरेलू अर्थात् नित्य व्यवहृत वस्तुओं से संबंधित पहेलियाँ अधिक है।

तृतीय अध्याय

पहेली : एक विवेचन

तृतीय अध्याय

= = = = = = :

पहेली - एक विवेचन

भारतीय परंपरा :

श्री गंगाधरम् जी ने पहेलियों को प्रारंभिक तुतली बोली माना है। ये मानव संस्कृति को समझने, मानव विकास को जानने केलिए सहायक होती है।

मानव गूढ प्रवृत्ति वाला होता है वह अपने भावों को भाषा के द्वारा स्पष्ट कर सकता है और कभी स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं भी कर सकता। ऐसे समय में वह अपने भावों को व्यक्त करने के लिये टेढ़े मेढ़े रास्ते का सहारा लेता है। इस प्रकार गुप्त रूप से कहने को ही पहेली कहते हैं।

डा० फ्रेजर ने इसी से पहेलियों की उत्पत्ति माना है। बंगला लोकसाहित्य में विभिन्न विषयों के बीच पहले पहल पहेलियों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था अतः इसका संग्रह भी बहुत ही अल्प था। कविगुरु 'रवीन्द्रनाथ ठाकुर' ने भी इसके बारे में कुछ उल्लेख नहीं किया इसलिये समाज की दृष्टि भी इस की ओर नहीं गई।

बंगलादेश चट्टग्राम में रहनेवाले साहित्य विशारद मुन्सी करीम

ही बंगला पहेलियों के सर्वप्रथम संकलन कर्ता माने जाते हैं। उन का चट्टोग्रामी 'हैले ठकानौं धाधा' नामक पत्रिका 1312 में पहले पहल प्रकाशित हुआ। उसके बाद ही बंगला देश के कुछ कुछ आंचलिक पहेलियां पत्र - पत्रिकाओं में आगे चलकर प्रकाशित होने लगी हैं।

कुछ लोग पहेली को लोकसाहित्य के समस्त अंगों की अपेक्षा सर्वाधिक प्राचीन मानते हैं। एक पाश्चात्य विद्वान का कहना है - - - "ए गुड केस कुड प्रौबेब्ली बी मेड फार दैयर पिरीओरिटि टु अल आदार फर्मस् आफ लिट्रेचर अर इभेन् टु अल, आदार ओरल लोर, फार रिडिल्स आर इसनसियलि मेटाफोरस, एन्ड मेटाफोरस आर दा रेजल्ट आफ दा प्राईमारी मेन्टल, प्रोसेसेस् आफ एसोसियेसन, कमपेरिजन एन्ड दा परसेपसन आफ लाईकनेसेस एन्ड डिफारेन्सेस।"

किसी ने आचार मूलक पहेली को, किसी ने अंग प्रत्यंग संबंधी पहेलियों को, किसी ने प्रकृति संबंधी पहेलियों को तथा किसी ने नक्षत्र संबंधी पहेलियों को सबसे प्राचीन माना है। इसमें से किसी मत को भी गलत या सठीक कहना मुश्किल है क्योंकि प्रमाणों का अभाव है। यह मौखिक तथा परंपरागत रूप से अत्यंत प्राचीन काल से चली आ रही है।

निश्चित रूप से केवल इतना ही कहा जा सकता है कि लौकिक पहेलियां उस समय निरक्षर समाज में शिक्षा के रूप में व्यवहृत थीं, इसमें शिशुओं को आनन्द के साथ साथ शिक्षा भी प्राप्त होता था। एक अंग्रेज विद्वान ने कहा - - - "आई हैभ सेट बाई दा स्टोभ आफ ए विन्टर नाईट ऐन्ड गिभन् दा एन्सारस् टु दा रीडल्स, माई फादार एंड

मादार अल्टरनेटली आस्कड मी एज दे वेन्ट थ्रूदा केटसीजम देयार पेरेन्टस् हेड टाउ् देम। इट् वाज पार्ट आफ माई एजुकेशन एंड माच मोर इन्टरेस्टिंग दैन दा लेसेन्स इन ग्रामार स्कूल, इट वाज माच मोर माइन्ड स्ट्रेचिंग फार दा एन्सार टू ईच निउ रीडल् वाज नाट गिभन् मी आनटिल् आई हेड ट्राईड लंग एन्ड हार्ड एंड टार्नड् दा गिभन सिचुवेशन् एभरी हुच् वे सीकींग दा सलिउशन्।" डायरेक्ट आर इनडायरैक्ट आर कम्पलीट आर इनकम्पलीट इन ट्रेडिशनल् फार्म ह्येयारबाई दा कोश्चेनार चैलेनजेस ए लिसनार टू रीकगनाइज एन्ड आइडेन्टिफाई दा एक्विउरेसी, दा इउनिटि, दा ट्रुथ इन ए स्टेटमेन्ट दयेट इयुजुअलि सीम्स इम्प्लाउजिबल् आर सेल्फ कनट्राडिक्टरि, बाट् दयेट् इज इन इटस् औन पिकिउलियर लाईट अल्वेज ट्रू। दा रिडल इज इउनिभर्सिल् एज एभरि फोक - लोर कालेकटार हु हेज एभर ट्राईड टू कालेक्ट रिडिल्ज हेज - डिसकभारड् - औआन्स ही हेज अलसो डिसकभारड् दा प्रोपार लोकाल टार्म बाई ह्वीज हिज इन फार्मेन्टस् आइडेन टिफाई दा रीडल् कानसेप्ट"

अर्थात् पहेली एक प्रश्न है। वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष पूर्ण या अपूर्ण रूप में रहती है। वह प्रश्न करता है कि श्रोता पहेलियों को पहचानने और जानने में सहायक होता है। यह एक सच्चा मार्ग है और अपने सच्चे रूप में प्रकट होता है। यह अपने आप में बातचीत करनेवाले की तरह भी होती है। लेकिन इसका अपना एक

विशिष्ट स्थान रखता है, तथा ये हमेशा लक्ष्य के रूप में रहता है। पहेली का सर्वसामान्य व्यक्ति केलिए भी प्रयोग होता है। यह एक राष्ट्रीय संपत्ति है। अंग्रेजी में प्राचीन पहेलियों को 'ऐनिगन्योसिस' नामक आदमी ने प्रश्न के रूप में पूछा तो 'अडिपस' नामक आदमी ने जवाब दिया। यह नहीं कह सकते कि यह युक्त कहाँ तक ठीक है। "बातों पर और अक्षरों पर चमत्कार दिखानेवाली पहेलियाँ अर्थात् 'कोनैनडमस्' कहते हैं। ये अत्यंत नवीन है इस प्रकार की पहेलियाँ ग्रीक और रोमन में अधिक दिखाई पड़ती है।

अत्यंत गुरुवादी धर्म था। गुरु और शिष्य का संपर्क अत्यंत गोपनीय था अतः गुरु जो कुछ भी कहते थे, उसे शिष्य के सिवाय और किसी को भी समझना असंभव था। गुरु पहेली के रूप में शिष्य से बातचीत करते थे, 'नाथ साहित्य' का अन्यतम विषय 'गोरख विजय' में गोरखनाथ जब नर्तकी के वेश में उनका गुरु 'मीननाथ' को उध्दार करने गये तब उन्होंने अपने गुरु को मुख से कोई प्रश्न न पूछ कर पहेली के रूप में 'मृदंग' (बाजा) के माध्यम से प्रश्न पूछा था तब उस बाजे का अर्थ सिर्फ 'मीननाथ' को ही मालूम हुआ और किसी को नहीं, धर्म कथा के निगूढ अर्थ को गुप्त रखने केलिए इन पहेलियों का प्रचलन हुआ। लौकिक जगत में इसका प्रचार बहुत कम है।

साहित्यिक पहेलियाँ :

जो 'ऋग्वेद' में संकलित हुई हैं। वह पहले मौखिक रुप में प्रचलित थीं। 'ऋग्वेद' में ही साहित्यिक पहेलियों का प्राचीनतम निदर्शन मिलता है। 'बाइबिल' में भी 'सेमसन' की पहेलियाँ मिलती हैं वह भी पहले मौखिक रूप में प्रचलित थां, बाद में धर्म ग्रंथ में प्रवेशकर साहित्यिक पहेलियाँ बन गई। लौकिक या मौखिक रूप से प्रचलित पहेलियाँ जब दैनिक जीवन में प्रवेश कर लिखित रूप प्राप्त करती हैं तभी वह साहित्यिक पहेली बनती हैं।। अंग्रेजी में उसे 'लिटररी रिडिल्ज' कहते हैं - लोकसाहित्य के सभी विषय लिखित होने पर जिस प्रकार से उसका क्रमविकास रूक जाता है वैसे ही पहेलियों का विकास भी रूक जाता है।

विदेशी परंपरा :

ग्रीक में तो पहेलियाँ भगवान की वाणी जैसी मानी जाती थी, इसलिये उन्हें देवता वाक्य कहते थे। इसलिए प्राचीन काल में ग्रीक लोग इसे महत्वपूर्ण विषय मानते थे, और उनसे अलग नहीं होना चाहते थे। फिलिप्स के माता - पिता का यह विश्वास था कि उनकी बेटी कभी भी एक मानव को नहीं ब्याहेगी बल्कि भगवान से ही शादी करेगी, उसी समय पुराने जमाने के ग्रीक लोग चतुराई के घमंड का अनुभव करते थे वे लोग इन पहेलियों को पहचानते थे। इससे संबंधित एक हास्य जनक पहेली नीचे उधृत है - जैसे - -

'शहर की चौड़ी सड़क तथा

सफेद हाथ के देवता है '

इसी तरह ग्रीक में अनेक पहेलियाँ है जैसे - - -

होशियार - बेवकूफ, क्रूर - दयालु, और ठंगी - सावधानी,

ये सभी शब्द नाटकीय, हास्यास्पद, विरोधाभास अलंकार है। न

तो ये दैव वाणी है और न ही पहेलियाँ। ये संभव नहीं है कि ये

हमेशा, दूसरों के लिये है लेकिन सब उपाय सर्वसाधारण मानव केलिए

ही है। जब ये पहेलियाँ श्रोताओं के कानों तक जा फैलती है तब वे

ऐसा अनुभव करते है कि वे भी उसके भागी है और वे भी इसप्रकार

की मानसिक शक्ति का अनुभव करते है। इन पहेलियों को अक्सर

सब लोग पहचानते है और प्रायः संपादक उनको दूसरों तक फैलाते है।

अंग्रेजी में पहेलिया को 'रिडिलज' कहते है अंग्रेज विद्वान

विलियम ह्यूग जानसन पहेलियों के बारे में कहते है कि 'ए रिडिलज

ए कौरलेन '

यों पहेली एक विचित्र पहेली है।

xOx xOx xOx

चौथा अध्याय

पहेलियों के प्रकार

चतुर्थ अध्याय

:: :: :: ::

पहेलियों के प्रकार

= = = = = = = = =

बंगाल की पहेलियों का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उन्हें निश्चित रूप में कुछ श्रेणियों में विभाजित करना अत्यंत कठिन काम है, फिर भी विद्वान लोगों ने अध्ययन की सुविधा केलिए पहेलियों को विभिन्न श्रेणियों में रखने की कोशिश की है।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक जितनी बंगला पहेलियां हैं उन्हें विद्वानों ने मोटे तौर से चार भागों में विभाजित किया है। जैसे - - - - -

1) आचार मूलक पहेलियां

2) आध्यात्मिक पहेलियां

3) साहित्यिक पहेलियां

4) लौकिक पहेलियां

1) आचारमूलक पहेलियों का अस्तित्व वैदिक साहित्य से ही दृष्टि-गोचर होता है। ये पहेलियां भी लौकिक रूप में निष्पन्न होकर आचार मूलक बन गई हैं। यज्ञ, अनुष्ठान, विवाह, मृत्यु के साथ ही इनका संपर्क होता है। इसमें भी विवाह से संबंधित पहेलियां आज भी प्रचलित हैं। बाकी सब लुप्त हो गई हैं।

2) आध्यात्मिक पहेलियों को अंग्रेजी में रहस्यात्मक पहेलियाँ कहते हैं (मिष्टिक रिड्ल्स) इन पहेलियों को समझना साधारण मनुष्य के लिये असंभव है। यह केवल गुरु के निकट से शिष्य ही समझ सकता है, और शिष्य परंपरा में इनका प्रचार होता रहता है। साधारण जनता में इसका प्रचार नहीं होता, मध्ययुग तथा बंगाल के 'नाथ साहित्य' में इसका प्रचार मिलता है। इसका प्रधान कारण यह है कि नाथ धर्म लोकसाहित्य से भी होती है. साहित्यिक पहेलियों से भी कभी कभी लौकिक पहेलियों की सृष्टि होती है। पर ऐसा बहुत ही कम होता है । आधुनिक काल में साहित्यिक पहेलियों का प्रयोग शिशुयों के चित्त विनोद तथा आश्चर्य व्यक्त करने के लियें प्रयुक्त होता है। देश विदेश के साहित्य और जीवनचर्या के साथ मेल - जोल, के कारण नये नये विषय इनमें प्रतिनिध्य जोड़ दिये जा रहे हैं। इन पहेलियों की रचना में भी नई पध्दतियां अपनाई जा रही है।

बल्कि पहेलियों का विषय इतना व्यापक है कि उन्हें सुनिर्दिष्ट रूप से कुछ श्रेणियों में विभाजित करना असंभव है। खासकर प्रत्येक जाति के बीच इसका अपना कुछ विशेषत्व होता है। कुछ ऐसी पहेलियाँ हैं जिसका प्रचलन कुछ देश में ही हैं, दूसरे देशों में नहीं, जैसे 'बर्फ' के संबंध में बनी पहेलियों ठंड देशों में ही मिलती हैं। ग्रीष्मप्रधान देश में इसका अस्तित्व नहीं।

पहेलियों की प्रकृति जीवनचर्या के ऊपर भी कभी कभी निर्भर करती

है। अतः बंगाल में प्रचलित पहेलियों को भी उनकी अपनी प्रकृति के अनुसार विभाजित करना आवश्यक होता है। साधारण तौर से बंगला पहेलियों को निम्न श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

क नरनारी संबंधी पहेलियाँ

ख) प्रकृति संबंधी पहेलियाँ

ग) पशुपक्षी संबंधी पहेलियाँ

घ) ग्रह, नक्षत्र संबंधी पहेलियाँ

ङ) खेतीबारी संबंधी पहेलियाँ

च) स्फुट या स्वतंत्र संबंधी पहेलियाँ

छ) कहानी मूलक पहेलियाँ

ज) सामाजिक पहेलियाँ

झ) गणित संबंधी पहेलियाँ

ट) प्रश्नोत्तर संबंधी पहेलियाँ

ठ) प्रश्नविहीन पहेलियाँ

क) नरनारी विषयक पहेलियाँ : इन पहेलियों को तीन भागों में बाटाँ गया है - - -

अ) नरनारी और उसका अंग - प्रत्यंग

आ) पौराणिक नरनारी

इ) परिवार के सगे संबंधी

अ) नरनारी और उसका अंग प्रत्यंग - आदिकाल से ही मनुष्य अपने जीवन के संबंध में विस्मय प्रकाश करते हुये चले आ रहे थे उसे ही आधार बना कर बहुत पहेलियों का जन्म हुआ। मनुष्य के शैशव, वार्धक्य, जन्म - मृत्यु ने भी पहेलियों की रचना में प्रेरणा दी। इन पहेलियों के उत्तर मनुष्य स्वयं ही है। पाश्चात्य देशों में इन्हें 'दि रिडल्स आफ दि स्पिनक्स्' कहते है। ग्रीक साहित्य में ऐसा कहा जाता है कि 'साफिंक्स' नाम की एक राक्षसी रास्ते में बैठकर प्रत्येक पथिक से एक पहेली पूछती थी और पथिक उसका जवाब देने में असमर्थ होने पर उन्हें मार डालती थी । आखिर में राजा 'इडिपस्' जवाब देने में समर्थ हुए और उसके अत्याचार से सबको मुक्त किया। उन की पहेली इस प्रकार थी - - -

मनुष्य संबंधी

सकाले के चारि पाये हाटे?
द्विप्रहरे दूई पाये हाँटे?
सन्ध्याय तीन पाये हाँटे?

अनुवाद :

सबेरे कौन चार पैर से चलता है?
दोपहर को दो पैर से चलता है?
तथा शाम को तीन पैर से चलता है? (मनुष्य) इडिपस्)

हमारे यहाँ भी मनुष्य संबंधी कई पहेलियाँ है -

जैसे - ब्यांढ़ा कैला चार पाव

जोमान हैले दुई पाव

आर बुरा हैले तीन पाव

दि कन दिनि? (मानुष)

अनुवाद :

छोटा रहने पर चार पैर

जवान होने पर दो पैर

और बुढ़ा होने पर तीन पैर

बताओ तो क्या? (मनुष्य)

अंग्रेजी में जैसे - - -

ह्वाट क्रियेचर इस द्याट इन दि उवार्ल्ड द्याट, फार्स्ट गोज अन फोर फीट, दैन टू फीट, दैन थ्री फीट- दैन उपथ फोर ऐगेन।

नरनारी संबंधी :

मामादेर गहाने पाट (मुख, जिह्वा, दाँत)

बौत्रिशटि कलागाछ

ऐकरवानि पात।

अनुवाद :

मामाओं का पाट

बत्तिस कैला के वृक्ष

एक ही पत्ता (मुख, जिह्वा, दाँत)

उपर्युक्त पहेलियों के साथ अंग्रेजी पहेलियों की भी तुलना की जा सकती है। इसे अंग्रेजी में स्पिनिक्स् रिडिल्स कहते हैं - - -

1. ''ह्वाट् क्रिचेचर इज अर्टेट् इन दि वर्ल्ड व्येट फार्स्ट गोज अन और फीट, देन टू फीट, देन थ्री फीट, दैन उइथ ओर एगेन।"

2. ''फोर लेग्स इन दि मारनिंग
टू लेग्स इन दि मिडल अफ दि डे
थ्री लेग्स इन दि इभनिंग

अँगुलियों के संबंध में भी कुछ पहेलियाँ इस प्रकार की है -

एक हाथ गाबटि फूल तार पाँचटि (आगुंलि)

अनुवाद :

एक हाथ पेड़, फूल उनमें पाँच (उँगली)

उँगलियों के संबंध में दो अंग्रेजी पहेलियाँ इस प्रकार की है -

अ) बीहोल्ड ए स्टिक् अन व्हिच् देयर इज फैलश्

आ) आप् देयर (गोज) माई कोयिभाल।

अंग - प्रत्यंग में कोहनी की विशेषत्व भी कम नहीं, इसके बारे में भी कई पहेलियाँ मिलती हैं जैसे - -

'हाते आछे, हाथ बाढ़िये पाईना' (कोनुई)

अनुवाद

हाथ में है, हाथ बढ़ाने पर न मिले (कोहनी)

कान के बारे में भी कुछ पहेलियाँ है - - -

"पाहाड़ेर दुआरे दुभाई

देखा देखि नाई (कान)

अनुवाद :

पहाड़ के दो किनारों पर दो भाई

मुलाकात नहीं (कान)

केश के ऊपर भी कई पहेलियाँ है। अंग, प्रत्यंग में आँख विशेष महत्त्वपूर्ण अंग है अतः इस पर पहेलियाँ भी अधिक मिलती है।

	अनुवाद
ऐक फोटा पुकुरे	छोटी सी तालाब में
माछ कर कर करे	मछली तैरने लगी
एकशो हाजार जालुआ एलो	एक सौ, हजार मछुआ आये
धोरते नारि नारे (चोख	पकड़ नहीं पाये (आँख)

नाक संबंधी एक बंगला पहेली इस प्रकार की है - - -

पुकुई कुया, दुई धुया, दुटि दुआर (नाक)

अनुवाद :

धुआँ कहाँ, दो धोया, दो द्वार (नाक)

अंग्रेजी में :

"आई सी इट, यउ इ नट, बाट य इज, निअरर टू यउ दयान टू मी।"

इसी प्रकार नाभि, पदचिन्ह, पयोधार, पाकस्थली, मुखगह्वर, मृतदेह, शरीर, घुटना, हाथ आदि पर भी पहेलियाँ बनायी गई है। उपर्युक्त बंगला अंग प्रत्यंग संबंधी पहेलियाँ कोई विशेष ज्ञान के आधार पर नहीं तैयार हुई है बल्कि यह मनुष्य के अंग प्रत्यंग के रूप, आकार तथा उनकी उपयोगिता पर ही निर्भर है। ऐसी पहेलियाँ बंगला देश के सर्वत्र प्रचलित है।

आ) पौराणिक नरनारी : पौराणिक पहेलियाँ साधारण ज्ञान से ही रची गई है। पुराण, रामायण तथा महाभारत में वर्णित चरित्र निरक्षर समाज परिपूर्ण रूप से ग्रहण नहीं कर पाती, उनमें वर्णित चरित्र कल्पना युक्त भी है। पुराण की कथा मौखिक रूप से ही प्रचलित होती रही है। ये पहेलियाँ अधिकतर लोकसमाज में प्रचलित होने के कारण इन्हें लौकिक पहेलियाँ भी कह सकते है।

बंगला देश के गाँव गाँव में एकदिन पुराण की कहानी, अभिमन्यु की कथा मौखिक रूप से प्रचलित थी जैसे - - -

	अनुवाद
घाटेर उपर छेले नाचे	घाट पर लड़का नाचे
ओई छेलेटि के?	वह लड़का है कौन?
तोमार भाई की बटे	तुम्हारा भाई है क्या?
भाई नय भाशुर पो	भाई नहीं जेठ का लड़का
सताई छेले दबोर पो। (अभिमन्यु)	सौतेली, देवर का लड़का (अभिमन्यु)

विशेष अर्थ में ग्राम समाज में महाभारत की कहानी अर्जुन और सुभद्रा के संबंध में इस प्रकार की धारणा थी इसलिए पहेलियाँ भी वैसे ही रची गई - - -

	अनुवाद
भाई भातारि कोन नारि	भाई भतारि कौन नारी
छिलो धरातले	थीं धरातल में
पृथिवीर सबाई लोक	पृथ्वी के सभी लोग
सती बले तारे (अर्जुन, सुभद्रा)	सती कहे उन्हें। (अर्जुन, अभिमन्यु)

इसी तरह से उर्वशी, कर्ण, दुर्गा, दौपदी, सुभद्रा, लव - कुश कृष्ण गंगा आदि, जगत्पिता, दुर्गा, सृष्टि, देवराज इन्द्र, दौपदी, नारायण पंचपाण्डव, भीम तथा भीम की स्त्री दौपदी, पार्वती, वसुमती, द्रौपदी - वाल्मिकी, विद्यासागर, बेगम, ब्रह्मा, भगवती - दुर्गा, राहु - शनि, भगीरथ - भरत, महादेव - राम, युधिष्ठिर, राधा, रावण, लक्ष्मीदेवी, रामचन्द्र, हरिचन्द्र, सभी के बारे में अजस्र पहेलियाँ प्रचलित है।

ड) सगे - संबंधी विषयक पहेलियाँ : सगे - संबंधी विषयक पहेलियाँ बंगला में अजस्र है क्योंकि बंगालियों में रिश्ते - नाते का भी अभाव नहीं तथा सगे - संबंधी का भी लेखा जोखा नहीं। ऐसी पहेलियाँ अंग्रेजी, में भी मिलती है जैसे - - -

"ए ब्रादार आफ माई फादार हैड ए ब्रादार
एन्ड दैट ब्रोदार ओवाज नट एन आन्कल आफ माइन।"

ऐसी पहेलियों को अंग्रेजी में - 'परिवार संबंधी पहेलियां' कहते हैं।

बंगला का भी एक उदाहरण देखिये - - -

'एकटि तालेर तीनटि आंटि' (दादु, बाबा, छेले)

अनुवाद :

एक ताल का तीन गुठलि (दादा, बाप और लड़का)

2) प्रकृति संबंधी पहेलियां :

बंगाल की प्रकृति सदा ही मनोरम रही है। लोगों का मन सदा से ही प्रकृति की और आकृष्ट था। आदिकाल से ही प्रकृति की अदभुत क्रिया कलापों को देख कर मनुष्य ने आश्चर्य प्रकट किया। इन आश्चर्य तथा विस्मय के कारण लोगों ने प्रकृति के ऊपर असंख्य पहेलियाँ बनायी। जैसे - पेड़, पौधे, ग्रह, नक्षत्र, कीड़े, मकोड़े आदि पर बहुत पहेलियां मिलती हैं।

3) पशु - पक्षी संबंधी पहेलियां - :

मनुष्यों ने पशुपक्षी की आकृति एवं प्रकृति को देख कर भी बहुत पहेलियां रचा अंग्रेजी में इसे 'जुआलजिकल रिडिल्स्' कहते हैं। इसके अंतर्गत कीट - पतंग संबंधी पहेलियां भी आती हैं। एक खास बात यह है कि बंगाल में घृणित पशुओं के ऊपर कोई पहेलियां नहीं बनी हैं। जैसे कुत्ता सर्वत्र मिलता है पर उनके ऊपर कोई पहेली नहीं बनी। पर (स्त्री) गाय के ऊपर असंख्य पहेलियां हैं।

बंगला देश में मछली जैसा परिचित प्राणी और कोई नहीं।

इसलिये इन पहेलियों को एक अलग वर्ग में रखा गया है।

चूहा के बारे में एक पहेली नीचे दी जा रही है देखिये

अनुवाद

उपरे माटि नीचे माटि	ऊपर मिट्टी नीचे मिट्टी
चो लेबे जेना	चल रही जैसे
बाबुर बेटाटि (इंदुर)	बाबू की बेटी (चूहा)

गाय के बारे एक पहेली :

अनुवाद

चारटि घोटि, रसे भरा	चार घड़ा रससे भरा
आ ढाका, तारा उपुड़ करा (गोरू)	ढक्कन विहीन उल्टा किया (गाय)

पक्षी संबंधी :

अनुवाद

1) कोन पाखी ओड़े ना? (उटपाखी)	कौन पक्षी उड़ती नहीं?
2) जन्मों दिये बाप पालिये	जन्म देकर बाप भागा
मा होलो बनोबासी	माँ हुआ बन्वासी
जार छेले तार होलों	जिसका लड़का उसका हुआ
गाली खेलों पाड़ा पड़ोसी (कोकिल)	गाली खाये पास - पड़ोसी (कोयल)

मछली संबंधी पहेलियाँ कई हैं। यहाँ तक कि बंगाल में इतनी अधिक मछलियाँ मिलती हैं कि उनके आकार, रूप तथा नाम को लेकर अनेक पहेलियाँ बनायी गई है। अनेक मछलियों का उल्लेख इसमें रहता है।

अनुवाद

1) भितरे मांस, बाहिरे हाड़	भीतर मांस, बाहर हड्डी
माथार तलाय गु तार। (चिंड़िमाछ)	माथे के नीचे टट्टी उनकी (चिंडी - मछली)
2) तुमि जले, आमि डाले	तुम पानी में मै डाली में
देखा हबे मरोन काले (मछली)	मुलाकात होगी, मरने के बाद में (मछली)

3) कीटपतंग संबंधी पहेलियाँ :

विभिन्न प्राणियों के बीच नाना आकृति के कीट - पतंग मनुष्य के दृष्टिपथ में आते हैं एवं उसके विषय में सभी वास्तविक तथा प्रत्यक्ष ज्ञान लाभ कर सकता है। उन्हीं अनुभव या अभिज्ञता को दृष्टि में रखकर इन पहेलियों का जन्म हुआ।

आधुनिक नागरिक जीवन में इनका प्रयोग बहुत कम हो गया है क्योंकि आधुनिक युग में कीट पतंग की संख्या भी कम हो रही है।

जुआँ के उपर एक पहेली देखिये -

अनुवाद

1. कृष्णो वर्णों तनुखानि	कृष्ण वर्ण शरीर पर है छो पैर
गुटि छय पा	चुप चाप मनुष्य खाये
चुप कोरे मानुष खाय नाँई करे रा। (उकुन)	नहीं करे शोर (जुआँ)
2. ऐतोटुकु जिनिषटि	छोटी सी चीज गुड़ चीनी खाती है
गुड़ चिनि खाय बड़ो बड़ो लोकेरसंगे	बड़े बड़े लोगों के साथ

जुध्दों कोरे जाय (पिपडि) युध्द करती है। (चींटी)

4) ग्रह, नक्षत्र संबंधी पहेलियाँ :

संसार में ग्रह नक्षत्र सदा से ही मनुष्य के मन में आश्चर्य पैदा करती हुई आ रही है। आज के वैज्ञानिक युग में भी सारी परीक्षा-~~समीक्षा~~ ~~हुई जा रही है।~~ ~~उनके~~ निरिक्षा प्रवृत्ति तो ले र ही चल रही है। यह कोई नयी बात नहीं है। यह आदि मानव ने ~~अ~~ ग्रह, नक्षत्र संबंधी कौतुहल से ही इनका जन्म हुआ है। सूर्य की रोशनी, चन्द्रमा की चांदनी ताराओं की आकृति, सूर्य और चन्द्र ग्रहण, आकाश आदि सभी चीजें आदिम मानव के मन को आन्दोलित किया था। इन ग्रह, नक्षत्र को आचार, व्यवहार की दृष्टि में रखते हुए आदिम मानव (बंगाल के) पहेलियाँ तथा रूपकों की सृष्टि की थी। दूसरी पहेलियों की तुलना में ग्रह, नक्षत्र संबंधी पहेलियाँ संख्या में कुछ कम मिलते हैं क्योंकि समाज पर अन्य वस्तुओं की तुलना में इनका प्रभाव गौण माना जाता है।

ग्रह, नक्षत्र संबंधी पहेलियों के अंतर्गत - आकाश, रोशनी, हवा, बादल, पानी आदि भी आते हैं क्योंकि, ग्रह, नक्षत्रों के साथ इन सबों का संबंध रखता है।

नीचे आकाश संबंधी एक पहेली इस प्रकार है - - -

	अनुवाद
आशि टाकार बाधि	अस्सी रुपये का बक्री
नौब्बुई टाकार बोई	नब्बे रुपये का पुस्तक

ऐक पीठ दैखा जाब्बे	एक पीठ दिखाई पड़ता है
आर ऐक पीठ लोई? (आकाश)	दूसरा पीठ कहाँ? (आकाश)

अग्नि संबंधी

सब खाय, जल खैले	सब खाती है पानी पीने से
मोरे जाय (आगुन)	मर जाती है। (आग)

तारे संबंधी :

ऐक थाल सुपाड़ि	एक थाल सुपाड़ी
गुणिते ना पारि (तारा)	गिन नहीं सकती (तारा)

धुआ संबंधी :

डाल नेई, पाता नेई	डाल नहीं, पत्ती नहीं
तोबु गाछ बेड़े (धोंआ)	फिर भी वृक्ष बढ़ती है (धुआ)

सूरज संबंधी :

पूबदिकेर गाछटा	पूरब दिशा के पेड़
फल धोरेछे ऐकटा (सूर्यो)	फल लगती है एक

5) खेती बारी संबंधी पहेलियाँ :

यद्यपि बंगाल में कृषकों की संख्या पर्याप्त है फिर भी उनके जीवन से संबंध पहेलियाँ बहुत कम हैं। कृषक लोग दिन भर परिश्रम करने के उपरांत रात्रि में भोजन आदि से निवृत्त होकर बालकों से ऐसी पहेलियाँ पूछते हैं। बालक भी अपनी नानी, दादी, माता पिता से इन्हें सुनकर उत्तर देते हैं तो दोनों पक्षों का मनोरंजन होता है। कृषकों को भी

दिन भर थ ान के पश्चात् मन में शांति मिलती है।

खेती संबंधी पहेली

	अनुवाद
1. कोमर जले, जन्मों दिलों	कमर तक पानी में से
सुन्दर बाब्बार	जन्म दिया खूब सूरत बच्चे को
बच्चा आहे भितरे	बच्चे है अन्दर मां है बाहर (धान और फूल)
मां बाहरे (धान एवं खड़)	
2. कौन गाकैर धा े बीज	कौन से पेड़ मे आगे बीज
परे फूल (धान गाछ)	बाद में फल (धान का पेड़)

5) स्फुट या स्वतंत्र प ेलियां :

इस वर्ग के अंतर्गत उपर वर्णित सभी पहेलियों से संबंध न रखने वाली पहेलियां आती है। स्फुट पहेलियों की संख्या अधिक है। इनके अंतर्गत - गिर पड़ना, अन्न का कौर, केले का पत्ता तथा केले का पौधा, घूंघट काढना, साबुन, चुड़ी पहनाना आदि आती है।

गिर पड़ना संबंधी पहेली

खाने की चीज नहीं, सभी कोई खाये

वृध्द के खाने पर करती है हाय हाय

युवक के खाने पर देखता है इधर उधर

शिशु के खाने पर, नेत्र से बहे अश्रुधार (गिर पड़ना)

चुड़ी पहनाना संबंधी

अनुवाद

पोहुते गेलेई कांदा काटि	पहनते वक्त रोना - धोना
भैतोरे गेलेई हासि (चुड़ि परानो)	अन्दर जाने पर खुशी (चूड़ी पहनाना)

अतः ये पहेलियाँ उन्ही विषयों पर है जो ग्रामीण वातावरण से घनिष्ठ संबंध रखती हैं। व्यवसाय संबंधी विषय अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। खेती के भी कुछ ही गिने विषय है। प्राणियों के विषय में बंगाल में अधिक पहेलियाँ मिलती हैं। भोजन में से रोटी पर पहेलियाँ नही मिलती क्योंकि बंगाल के लोग अधिकतर 'चावल' खाते हैं। पशुओं के संबंध में भी अन्यान्य पहेलियों की तुलना में कम पहेलियाँ मिलती हैं। ऐसे सम्बधित, भोजन वस्तु से सम्बधित पहेलियाँ और प्रकीर्ण घरेलु वस्तु पहेलियों की संख्या अगणित है।

6) कहानी मूलक पहेलियाँ -

बंगला देश में कुछ पहेलियाँ सुदीर्घ कहानी के रूप में पूछा जाता है। कवि कालिदास के नाम से प्रचलित 'वैताल पंचविंशति' 'बौद्ध जातक' तथा अन्य प्राचीन कथा साहित्य में इनका उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है। यहाँ तक कि इस श्रेणी में आनेवाली संस्कृत कहानियाँ भी बंगला में रूपांतरित किया गया था। इन कहानियों में नीति, तथा उपदेश के साथ साथ, हास्यरस भी परिलक्षित होता था, अधिकांश बंगला कहानियों में प्रश्न यही पूछा जाता था कि बेवकूफ कौन? बहुत सारे बेवकूफों की कहानि कहने के पश्चात् यही पूछा जाता था कि इनमें से सबसे ज्यादा 'बेवकूफ' कौन है? 'बेवकूफों' की आचार, व्यवहार पर बनी पहेलियों से हास्य रस की सृष्टि होती आई है।

उदाहरण :

चार आदमी एक साथ गांव के पथ पर जा रहे थे। दूसरी ओर से एक आदमी आ रहा था। इन चारों को देखकर वह आदमी नमस्कार कह कर चला गया। कुछ दूर चलने के बाद इन चारों में झगड़ा शुरु हो गया। सभी एक दूसरे से यह कहने लगे कि - उन्होंने मुझे नमस्कार किया था। इस प्रकार झगड़ते झगड़ते जब कोई भी रास्ता नहीं मिला तो उस आदमी को बुलाया गया। उस आदमी ने बताया कि उन्होंने किसी को भी प्रणाम नहीं किया था उस आदमी से कई बार पूछने के बाद उन्होंने यह बताया कि 'आप लोगों में जो सबसे अधिक बेवकुफ है उन्हें ही वह नमस्कार किया था' यह सुनते ही चारों में फिर लड़ाई शुरु हो गई। सभी अपने को सबसे अधिक बेवकुफ ठहराने लगे। पहला आदमी ने यह बताया कि 'मैं ही सबसे अधिक बेवकुफ हूं क्योंकि पिताजी ने मुझे एक लोटा दिया था घी लाने के लिए। चलते चलते मुझे बहुत भूख लगी और मैं एक आने का 'मुढ़ी' खरीदा उन मुढ़ियों को लोटे में रखा और जब हाथ भरकर मुढ़ि निकालने की कोशिश की तो नहीं निकाल पाया। सारा दिन भूखा ही रहना पड़ा अतः मैं ही सबसे अधिक 'बेवकुफ' हूं तथा उस आदमी ने मुझे ही नमस्कार किया है।'

दूसरा आदमी ने बताया कि 'मैं ही सबसे अधिक बेवकुफ हूं क्योंकि एक दिन मेरे स्त्री ने धोबी को बुला लाने को कहा। मैं उन्हें न बुलाकर खुद ही कपड़ा दे आया। अतः उन्होंने मुझे ही नमस्कार किया।'

तीसरा आदमी ने बताया कि 'मैं ही सबसे अधिक 'बेवकूफ' हूँ क्योंकि एकदिन मैं अपने दोनों स्त्रियों को साथ लेकर सोया था और रात में मुझे आंख में चींटी काट रही थी पर मैंने उन्हे मारने के लिये हाथ न उठा पाया क्योंकि दोनों स्त्री गुस्सा हो जायेगी। सो नमस्कार मुझे ही किया होगा।

चौथा भी अपने को सबसे अधिक बेवकुफ जाहिर करने लगे उसने बताया कि 'मैं एक दिन अपने बीबी को आंगन के बीच से तम्बाकु लाने को कहा था पर वह नही लाई अतः मैं ही ले आया इसलिये नमस्कार मुझे ही प्राप्त है। (पहला आदमी सबसे अधिक 'बेवकूफ')

7) गणित संबंधी पहेलियाँ :

कुछ गणित के प्रश्न कभी कभी पहेलियों के आकार में पूछा जाता है। निरक्षार समाज में गणित संबंधी नाना समस्याओं का सुलझाव इसी तरह से होता था। उस समय मौखिक रुप से इन पहेलियों को पूछा जाता था इसमें बुध्दि की परीक्षा होती थी। यद्यपि इन पहेलियों की संख्या बंगाल में अधिक नहीं फिर भी गणित संबंधी - रुपया - आना पैसा संबंधित पहेलियाँ आज भी कभी कभी दृष्टिगोचर होती है। इनका भी प्रमुख ध्येय आनंद प्रदान करना है।

गणित संबंधी पहेलियाँ - जैसे -

1. के सा?

रावण मन्दोदरि जैसा

रावण+मन्दोदरि। दशानन+मन्दोदरि का एक आनन =

अर्थात् ।। मुख

2 झोमड़ी झुमड़ी गाछटि	फूला फला पेड़
फल धारेछे बारोटि	फल लगे हैं बारह
पाकले एकटि (ऐक बछोर)	पकने पर एक (एक साल)

8) प्रश्नोत्तर पहेलियाँ

बंगाल में कुछ पहेलियाँ प्रश्नोत्तर रूप में भी मिलती हैं। ये पद्य तथा गद्य दोनों रूप में ही उपलब्ध होती हैं। इसमें मनोरंजन होता है। प्रश्नोत्तर संबंधी पहेलियाँ छोटे तथा बड़े दोनों आकार में ही मिलती हैं। 'नाथ साहित्य' में ही ऐसी पहेलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। इन पहेलियों का उत्तर साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति नहीं दे सकता। अधिकतर तत्वज्ञ व्यक्ति ही इनका उत्तर दे सकते हैं। गोपीचन्द्र की गेय कहानी में ऐसी पहेलियाँ हैं - - -

जब राजपुत्र गोपी चन्द्र को उनकी माता सन्यास ग्रहण करने को कहती है तो वह माता के ऊपर क्रोध करता है और सन्यास के लिए राजी नहीं होता। जब माँ उन्हें संसार की निस्सारता के बारे में बताती है तो वह माँ से कहता है कि तुमने कैसे ये तत्व ज्ञान लाभ किया? पहले मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा और बताया कि मेरी पहेलियों का जवाब दो - - - -

प्रश्नोत्तर पहेली :

प्र : आकाश हिलता है, जमीन हिलती है, गिरता है पवन पानीत सात हजार लायी हिलके कौन सी नहीं हिलती?

उ : आकाश हिलता है, जमीन हिलती है, हिलता है पवन

पानी सात हजार लायी हिलते कपाल नहीं हिलता।

इस प्रकार गोपीचन्द्र की माँ मयनामती ने प्रत्येक पहेली का सन्तोषजनक रूप से उत्तर दिया। तब गोपीचन्द्र ने सन्यास ग्रहण किया।

9) प्रश्नविहीन पहेलियाँ

कुछ पहेलियाँ प्रश्नविहीन रूप में भी मिलती हैं जिसे बंगला में 'प्रौवाद' या 'हैयाली' कहते हैं। इन पहेलियों का उत्तर उसी में छिपा रहता है। इन पहेलियों को सुनने से ही उसके अंदर का छिपा हुआ उत्तर अपने आप मालूम हो जाता है। इन पहेलियों का भी मुख्य उद्देश्य आनन्द देना ही है। नीचे इस प्रश्नविहीन पहेली का एक नमूना आप के सामने उपस्थित कर रहे हैं जैसे - - -

1) पानी का जानवर नहीं, किन्तु वह पानी में रहती है
मनुष्यों को वह छाती पर, धारण करती है
पैर नहीं फिर भी जाती है, पवन के समान
कोने में जो पकड़ कर बैठता है वही उनका पति है। (नाव)

2) जन्तु दानव बहुत पवित्र
सूखने पर जलाकर मारी (गोबर का कंडा)

3) पूँछ कटी बीबी को नाना रूप देखती हूँ। (सावन)

4) राजा वह कभी नहीं, फिर भी वह नरों का पति (तितली)

5) तू मेरी बड़ सच्ची

मूलधन उसका है मिट्टी (कुम्हार)

10) सामाजिक पहेलियाँ -

बंगाल के सामाजिक जीवन में भी पहेलियों का महत्व अत्यधिक है। बंगाल में अनावृष्टि सामाजिक जीवन का एक बहुत बड़ा संकट है। बंगाल देश में संक्रांति के अवसर पर 'गाजन' का अनुष्ठान होता है। उसमें मंत्रशक्ति के द्वारा अनावृष्टि को दूर किया जाता है। उस समय भी पहेलियाँ पूछा जाता है।

शादी के अवसर पर भी वर को पहेली के रूप में कई प्रश्न पूछा जाता है मानों उनका परीक्षा चल रहा हो क्यों कि उन दिनों विद्या बुद्धि की परीक्षा के लिये आज के समान विश्वविद्यालय या शिक्षा केन्द्र नही था। वर को पहेलियों का जवाब देकर परीक्षा उत्तीर्ण होना पड़ता था। उन दिनों पृथ्वी के प्रायः सभी देशों में यह रीति प्रचलित थी। आज भी कहीं कहीं यह नियम दृष्टिगोचर होती है।

किसी पाश्चात्य विद्वान का कहना है कि 'दि टारकिंग गार्लस् टु टेस्ट दि इनटेलिजेन्स अफ देयर अडमाइरारस् बाई आसकिंग देम टु इनसार टफ रिडिल्स सीम टु हैव लेआट में बी ए प्रीमीटिव, बाट इज प्रोबेबली ए प्रैकटिकल् फरम् आफ ट्रायल मैरेज।'

पहेलियों का प्रयोग विभिन्न समाज में विभिन्न रूप से दिखलाई पड़ती है अर्थात् आदिवासी समाज में पहेलियों का प्रयोग एक प्रकार का होता है, उन्नतर समाज में इसका प्रयोग दूसरे रूप में होता है।

पहेलियों का प्रयोग समाज में अधिकतर पुरुषों के बीच में ही अधिक पाया जाता है। जैसा कि हमें मालूम है कि लोकसाहित्य का दूसरा विषय अधिकतर स्त्रियों में ही प्रचलित है पर इनमें ही व्यतिक्रम दिखलाई पड़ता है। ऐसा इसलिये होता है क्योंकि बाकी विषयों में हृदयगत भाव अधिक रहता है पर इसमें मस्तिष्क विशेष सहायक होता है, और जहाँ स्त्रियों का अधिकार पुरुषों की अपेक्षा कम होता है।

x :: x :: x

पंचम अध्याय

वर्ण्य विषय

पाँचवा अध्याय

वर्ण्य विषय

पहेलियों को संस्कृत में 'ब्रह्मोदय' कहा गया है। पहेलियों से केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि समाज विशेष की मनोदशा को प्रकट करती है और उसकी रुचि पर प्रकाश डालती है। ये मनोरंजन के साथ साथ बुध्दि मापक भी है। ये समय, असमय, शिक्षित, अशिक्षित अमीर - गरीब सभी कोटि के मनुष्यों और जातियों में प्रचलित है। बंगाल की पहेलियाँ मनोरंजन तथा बुध्दिविलास का काम देती हैं। बंगाल में प्राप्त पहेलियों को साधारणतः ग्यारह भागों में बाँट सकते हैं - जैसे

1) प्रकृति संबंधी - जैसे दिन - रात, तारे, चन्दा - सूरज, फूल, आकाश पेड़ - पौधे, मेघ, बिजली, पहाड़, पर्वत आदि।

2) पशुपक्षी संबंधी - जैसे - गाय, बैल, हाथी, घोड़ा, ऊँट, पक्षी, कौआ, कबूतर, तोता, मुर्गी, बतक आदि।

3) ग्रह, नक्षत्र संबंधी - जैसे - आकाश, रोशनी, हवा, बादल, पानी आदि।

4) खेतीबारी संबंधी - जैसे - धान, फुस, बीज बोना, हल चलाना, बैलजोतना, भोजन संबंधी पहेलियाँ भी इसी के अंतर्गत आते हैं जैसे कट-हल, नारियल, अनन्नास, आम, केला अंडा, काली मिर्च, नमक आदि

5) स्फुट या स्वतंत्र पहेलियाँ : इसकी संख्या असंख्या है जैसे - गिर पड़ना, अन्न का कौर, घूंघट काढ़ना, साबुन, चुड़ी पहनना आदि

6) कहानी मूलक पहेलियाँ : जैसे - 'वैताल पंचविंशतिका' कहानी तथा 'जातक' कहानियाँ

7) सामाजिक पहेलियाँ : जैसे समाज में प्रचलित आचार - व्यवहार, पूजा - पार्वन आदि संबंधी।

8) गणित संबंधी पहेलियाँ - जैसे - जोड़ना, घटाना, गुणा करना, संख्या संबंधी आदि।

9) प्रश्नोत्तर संबंधी पहेलियाँ - किसी प्रश्न को पूछना और उसे जवाब द्वारा हल करना।

10) प्रश्नविहीन पहेलियाँ : ये पहेलियाँ कुछ नया रूप लिये रहती हैं। बिना प्रश्न के पूछने पर भी जवाब उसी में छिपा रहता है।

11) प्राणी संबंधी पहेलियाँ : जैसे - जूं, मधुमक्खी, साँप, जोंक, इन सबों के अलावा और भी कई प्रकार की पहेलीयाँ है जैसे घरेलू वस्तु संबंधी जैसे - दीपक, मूसल, धान, कची, आग, चूल्हा, दरवाजा, कुर्सी, छतरी वीणा आदि।

12) शारीरिक या अंग प्रत्यंग संबंधी : जैसे आँख, नाक, कान, हाथ, पैर , मुंह, जीभ आदि।

यों आभूषण संबंधी पहेलियाँ भी अल्प संख्या में मिलती है पर शृंगार साधक संबंधी पहेलियों की संख्या बहुत है जैसे - काजल, टीका,

कंघी, औष्ठ रंजनी।

उपर्युक्त सभी प्रकार की पहेलियों में मनोरंजन का तत्व प्रमुख है। वस्तुपरक दृष्टि होने के कारण हास्य विस्तार का अधिक अवसर मिलता है। पहेलियाँ व्यापक धरातल पर फैली हुई है। जिनमें मूर्त के अतिरिक्त अमूर्त भावनाओं की अभिव्यक्ति भी होती है। प्रायः वे ही वस्तुयें ली गई हैं जो जीवनस्तर के अनुकूल है, और ग्रामीण वातावरण एवं जन - जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध रखती है। इनमें कुछ वस्तुएं बार बार इसलिये प्रयुक्त होती है कि ये वस्तुएं ग्रमीणों के दैनिक कार्य से संपर्क रखती हैं। शब्दों द्वारा शब्द चित्र उपस्थित करने कीशक्ति इन पहेलियों की एक विशेषता है।

दूसरी विशेषता है है कि 'प्रस्तुत द्वारा अप्रस्तुत का बोध करती है' निष्कर्ष रूप से यह कहा जाता है कि पहेलियाँ वास्तव में भावात्मक तथा कल्पना से पूर्ण अवश्य है।

//•// //•// //•//

षष्ठ अध्याय

तुलनात्मक अध्ययन

षष्ठ अध्याय

तुलनात्मक अध्ययन

पहेलियाँ : एक तुलनात्मक अध्ययन :

पहेलियाँ :

जैसा कि हमें मालूम है कि यह लोकरंजन के माध्यम है। विश्व के लोकसाहित्य में सभी भाषाओं में पहेलियाँ पाई जाती है। पहेलियों का आनुष्ठानिक प्रयोग केवल भारत में ही नहीं बल्कि संसार के अन्य देशों में भी मिलता है। सभी भाषाओं में पहेलियाँ मोटे तौर से सात भागों में विभाजित की जा सकती हैं। यद्यपि कुछ देशों में कुछ उपविभाग भी मिलते हैं यं तथापि साधारण विभाग की ओर ही विशेष ध्यान दिया जाता है। एक ही वस्तु से संबंधित पहेली प्रत्येक भाषा में दृष्टिगोचर होती है, पर उस में केवल भाषा की भिन्नता मिलती है। अन्यथा उसमें अंर्त-निहित अर्थ एक ही रहता है। उदाहरण स्वरूप हम बंगाल की एक पहेली को लें तो अन्यान्य भाषाओं में भी उसे पायें गे पर उनमें भाषा की विभिन्नता होगी - - -

भारत के गरीब लोग 'चावल' का अधिक प्रयोग करते हैं। उनकी उदर पूर्ति का यह अत्यंत उपयोगी साधन है। इसके संबंध में सभी भाषाओं

में पहेलियाँ हैं।

चावल संबंधी

बँगला	भोजपुरी
ढोल ढोल ढोल दुलेछि,	आकाश गड्ले चिरई
छेले छेलाय खेलेछि	पाताल गड्ले बच्चा
बड़ो बयेसे सुन्दोरि हबो	हुच्चुक मारे चिरई
न्यांटा शोयें बाजारे जाबो (चाउल)	पियाव मोर बच्चा (ढेंकुल - खेत सींचने का यंत्र)

हिन्दी

एक अचम्भा मैंने देखा, कुएं में लागी आग

पानी पानी जल गया, मछली खेले फाग (भात)

तारों के संबंध में बँगला में कई पहेलियाँ हैं। तेलुगु, मलयालम भोजपुरी तथा हिन्दी में भी तारों के संबंध में पहेलियाँ हैं केवल भाषा का अंतर ही वहाँ दिखाई पड़ता है। अंतर्निहित भाव एक ही है जैसे -

बँगला	हिन्दी
झिकि मिकि करे	एक थाल मोतिन से भरा
चारिदिके घुरे बेड़ाय	सबके सिर पर औंधा धरा
एकटाओं ना परे (तारें)	चारों ओर थाल वह फिरे
	मोती उससे एक न गिरे (तारें)

मलयालम	तेलुगु
दिया पिता ने एक अंशुक	1. ऊँरतकी ओकटे दुप्पटि
पहने पहने पर खतम न होता (तारे)	(आकाशमु)
	2. ापनु चुट्टालेमु चक्नु
	पैट्टालेमु (आकाशमु)

बंगला में जहाँ आकाश मोती ी थालियों की तरह है। अर्थात् विराट थाली मोतियों मे रा माने आकाश को एक बहुत बड़ा थाली बताया गया है और तारों को मोती, तेलुगु में उसी आकाश को एक विराट चद्दर बताया ग ा है।

बंगाल में बादल के संबंध में एक पहेली देखिये - - -

बंगला	हिन्दी
पाखा नाई उड़े जाय	अंत आदि से शकुनि लघु
मुख नाई डाके	जीवन दाता नाम
चोख कैटे आलीकुटे	नाम रुप पहचानिये
कान काटे चाकि (बादल)	तब कीजिये कुछ काम (बादल)

मलयालम

दौड़ता है पैर नहीं है

रोताहै आँख नहीं है

गर्जन करता है मुँह नहीं है

हँसता है पर नहीं है होंठ (बादल)

बंगला तथा हिन्दी में बादल के हाथ पैर तथा मुंह न होने पर भी उनमें अद्वितीय शक्ति का वर्णन मिलता है।

चक्की के संबंध में पहेलियां

बंगला	हिन्दी
मुखे खाय पेटे हागे (जाता)	मुंह से खाती है पेट से हगती है
	(चक्की)

मलयालम	कुमाऊं
भाई मंच पर	माचि माचि काली दुई मोकरी है
बेटी नाट्य मंच पर (चाकी)	और आसन बांधे जोगी है। (चक्की)

बंगला में यह पहेली मनुष्य के रूप में चित्रित है। मलयालम में मां और बेटी के रूप में, कुमाऊं में चक्की को मोकरी और जोगी के रूप में चित्रित है।

कुछ पहेलियां ऐसी है जिनका प्रयोग अनेक स्थानों पर एक ही रूप या अर्थ में प्रयुक्त होती है जैसे --

बंगला	हिन्दी
ऐकबार आसे एक बार जाय आबार आसे	क्या पत्ते में क्या पत्ते में
किंतु आबार जे जाय आर आसे ना '	और नहीं तो कलकत्ते में
(दांत)	घर है लत्ते लत्ते में (दांत)

आंखें के संबंध में पहेली

बंगला	कुमाऊं
ऐक आखि दुई भाई	जहां दो सरोवर

काहुर संगे देखा नाई (आँखें) लबालब भरे हुये है (आँखें)

मलयालम

दूध की नदी में है

एक जामुन फूल (आँखें)

बंगला में आँख को दो भाई के रूप में वर्णित किया गया है। मानों नाक उनका सखी है दुख यह है कि एक ही दूसरे के साथ मुलाकात नहीं होती। कुमाऊँ में आँख को लबालब भरे हुये एक पूर्ण सरोवर के रूप में और मलयालम में दूध की नदी के रूप में चित्रित है। तीनों ही भावना से पूर्ण और सुंदर है।

पहेलियाँ बौद्धिकता प्रधान होने के साथ साथ भावों की अभिव्यंजना भी इसमें मिलती है। मुख्य भाव - आश्चर्य, विस्मय और हर्ष का होता है। जैसे - - -

है एक शीशा

दो तेल से भरे हुये।

इसका उत्तर क्या हो सकता है? हम असमंजस में पड़ जाते है। शीशा तो एक ही है पर उसमें दो तेल कैसे डाला जा सकता है? यह विस्मय या आश्चर्य उत्पन्न करता है। जब हम इसका उत्तर जान लेते है तो हमें खुशी अवश्य होती है पर उत्तर देने में कुछ देरी अवश्य हो सकती है।

उसी प्रकार केले के संबंध में भी पहेली ली जा सकती है

बंगला	हिन्दी
पाकालेओ खान, काँचालेओ खान	एक भाई ने जन्म दिया
बेते बोल्ले चौटे जान (कला)	फिर न दे सकी (कला)

इसमें विशिष्ट शब्द योजना के कारण हास्य उत्पन्न नहीं होता जब हम इसका उत्तर केला जान लेते है तो यथार्थता का बोध होता है।

बंगला में मेघ, तारें, चाँद, सूरज से युक्त आकाश के लिए एक पहेली नहीं है बल्कि प्रत्येक चीज के लिए कई पहेलियाँ हैं।

जैसे

आकाश के लिये

बंगला	हिन्दी
आशि टाकार धासि	
नोब्बई टाकार बोई	एक भाई ने रोते वक्त
ऐक पीठ देखा जाबे	बन्द कर ली आँखें
आर ऐक पीठ खोई?	

इसमें वर्षा के समय आकाश नक्षत्रों से शून्य होता है। इसी का वर्णन आँखों के साथ किया गया है।

सूरज के लिए

बंगला	हिन्दी
मायेरो मामा	
बाबारो मामा के? (सूर्जो)	अकेला कौन घूमता है? (सूरज)

भोजपुरी

संसार भर में एकै गोरका (सूरज)

चांद के लिए

बंगला	भोजपुरी
सकोल लोके मामा बले	
केउ नेई तार केले	
सकोल लोके तार केले	सविसे टाल में एगो बाराई
मां कोनों दिन	(चन्द्रमा)
नैय नि कोले (चांद)	

तारों के लिये

बंगला	हिन्दी
सन्ध्याकाले जनोम जार	एक थाल मोतिन से भरा
प्रीभाते मरोण	सबके सिर पर औंधा धरा
जिनिष खुजे पावेना	चारों ओर थाल वह फिरे
आर ऐमीन (तारे)	मोती उससे एक न गिरे (तारे)

आसमान रूपी राजा के तारे रूपी आंख है। अंग्रेजी की एक पहेली को देखिये :

ह्वाट् इज इट् दैट वाक्स् अन् फोर लेग्स ऐट
मन् टाईज, अन् ट् लेग्स ऐट वार्ड नून,
ऐन्ड अन थ्री लेग्स ऐट सन् सेट?'

संसार में जानवर ही एक ऐसा प्राणी है जो चार पैरों से चलते हैं केवल मनुष्य ही दो पैरों से चलता है। सब सोचना यह है कि तीन पैरों से चलने वाला प्राणी भी कोई हो सकता है या नहीं? अगर

हम बुद्धि तथा श्रम से साथ इसकी खोज करें तो मालूम होगा कि इसका उत्तर 'मनुष्य' है। पर फिर भी मन में यह शंका रह ही जाती है कि इसका उत्तर भला 'मनुष्य' कैसे हो सकता है? क्योंकि उनका तो दो पैर ही होता है। पर जब हम कुछ ध्यान लगाकर सोचते हैं तो आसानी से इसका उत्तर मिल जाता है। हम बाल्यकाल की तुलना सूर्योदय, बच्चों के रेंगने की तुलना मध्यान्ह तथा सूर्यास्त की तुलना बुढापे से कर सकते हैं। तभी हमें आसानी से इसका उत्तर ढूढने मे समर्थ होते हैं। इसी तरह से बुढ़ापे में वह लाठी के सहारे चलता है अर्थात् इस प्रकार से 'मनुष्य' का तीन पैर होता है।

इसी भाव को प्रकट करने के लिए मलयालम, तेलुगु, बंगला तथा हिन्दी में भी पहेलियाँ हैं - - - -

बंगला

छोटो बेला चार पाओ, जोवान होइले दुई पावा
बुरा होइले तीन पाव, की कओ देखि? (मानुष)

मलयालम

कोल्विकाले नाले वळे अविडम विट्टाल रन्टेकाल
पत्तीरन्नि याल मून्नेकाल (मनुष्यन्)

तेलुगु

पिन्नाले वन्नवन मुन्नाले पोयि
कुट्टि किउन्नवन वे षम् परिन्तु
काट्टल किडन्नवन कुट्टाई वन्तु
दूरम्निन्नवन चारन्तु वन्तु (मनुष्यु)

बँगला की इस पहेली का अर्थ इस प्रकार है - छोटो केला अर्थात् - बाल्यकाल में चार पैर क्यों कि वह घुटनों के बल चलता है। जोआन - माने जवान बनने पर दो पैर से चलता है। बुरा होबले - माने बुड्ढा होने पर तीन पैर क्योंकि तब वह लाठी का सहारा लेता है। अतः इसका उत्तर 'मनुष्य' है।

अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रत्येक भाषा की पहेली में अंर्तनिहित भाव एक सा ही रहता है चाहे भाषा कोई भी हो या किसी देश की हो।

अगर हम काश्मिरी पहेलियों की ओर ध्यान दें तो हमें यह पता चलेगा कि ये प्रायः कई वाक्यों में होती है यही इसकी विशेषता है और इनका उत्तर अक्षर से ही देना पड़ता है। उदाहरण नीचे दिया जा रहा है - - -

कश्मिरी पहेली

बेरे बेरे वादशाह वेरे

वेरे पनय गगुरा जाव

गगरस पनय नानक पूता

पूति पनय पूता जावा।

राजा के खेत में चूहे के समान एक अंकूर फूटा, उसका बेटा हुआ, बेटे के भी बेटा हुआ तब उसने अपना असली रूप धारण किया

(धान)

तारों के संबंध में एक काश्मीरी पहेली देखिये :

पचिमिल गुलाब चवान नह कांह

मुदमुन राजा वदान नह कांह

वउथल क्यमरवाव वैरान नट्ट कांह (तारें)

गुलाब के फूल खिले हैं, लेकिन उन्हें कोई भी काट नहीं सकता।

'जो अपने को राजा समझता था वही मर गया लेकिन रोना नहीं'

सच बात तो यह है कि कुत्ता मर जाने से कोई भी नहीं रोता पर मानलीजिये कि किसी का पालतू कुत्ता मर गया है तो भला वह कैसे नहीं रोयेगा अर्थात् जरूर रोयेगा।

संस्कृत साहित्य में तो पहेलियों की भरमार है उनमें तो कुछ पहेलियाँ ऐसी भी है जिनका उत्तर साथ ही दिया गया है जैसे - - -

का काशी का मधुरा, का शीतल वाहिनी गंगा

कं संजघान कृष्णः

कं वलवर्त न बाधते शीतम?

इसका अर्थ इस प्रकार का है - - -

1. मधुर कौन सी वस्तु है? (काम देव की सुरा)

2. शीतल वाहिनी गंगा कहाँ है? (काशीतल वाहिनी गंगा)

3. कृष्ण ने किसकी जान से मार डाला?

4. किस शक्तिशाली व्यक्ति को जाड़ा नहीं लगता?

5. जिसके पास ओढ़ने के लिए कंबल है उसे जाड़ा नहीं लगता।

कुछ पहेलियाँ ऐसी भी है जिनका उत्तर बाहर से देना पड़ता है और कुछ में क्रियापद गुप्त रहता है।

मलयालम में उक्त तीनों प्रकार की पहेलियाँ नहीं मिलती।

बंगाल में संस्कृत जैसी पहेलियाँ असंख्य हैं।

राजस्थान में भी पहेलियाँ मिलती हैं उन्हें गूढ़ा कहते हैं। वहाँ भी विविध वस्तुओं से संबंधित पहेलियाँ मिलती हैं। ये गद्य तथा पद्य दोनों आकार में प्राप्त होती हैं। केरल के भी सभी प्रदेशों में अलग अलग पहेलियाँ मिलती है। आन्ध्र प्रांत में भी सभी विषयों पर अलग अलग पहेलियाँ मिलती हैं।

इन पहेलियों में राजस्थान के साथ साम्य पाया जाता है। उदा: के लिए राजस्थान में चांद आम, आग जू आदि से संबंधित अनेक प्रकार की पहेलियाँ मिलती हैं केरल में भी वैसा ही। यों तो सभी देश की पहेलियाँ प्राय: एक सी ही होती है केवल भाषा में भिन्नता मिलती हैं।

राजस्थानी पहेलियाँ :

1) ऊंदी ऊंदी तैगणी, पिटारी मथ्यां जाय

राजा मुंह से मांग ले, पण देई न जाय। (अग्नि)

2) दयमुल नो नीचे बसै, मोतीविल कै बीच

सो पल मागे राधका, क्रिस्नो करो बगससि

मोति मांगे यू पणा हीरा यूं दस बीस

यो तो कुल में ■■ एक है, काय करे बगसीस,

(समुद्र में चांद की परछाई)

3) सूवो मालंग नौचरी, बुगलो बाकि संग

मे तनै पूछू सखी, क्यांरु एक रंग (धान)

4) छोटी सी चोम्ली, लवाई नाव

चढ गई डूमरी, उड़ाय ल्याई गांव (आग)

उपर्युक्त सभी दृष्टांतों को देखने से यह पता चलता है कि 'लोकहृदय' सर्वत्र एक सा ही रहता है। उनकी कल्पना शक्ति उर्वर होती है और उनका अनुमान लोकमानस के अनुकूल तार्किक रहता है।

■■ ■■ ■■ ■■ ■■

सप्तम अध्याय

शैलीगत विवेचन

सप्तम् अध्याय

शैलीगत विवेचन

संगीत हमारी सोती हुई भावनाओं को जगाती है। लय के बिना कोई भी संगीत शोभा नहीं देता, संगीत का सहचर लय है। सभी प्राणवंत जीव और मानव संगीत और लय से मुग्ध होते हैं। साधारणतः बच्चे तो लय से और भी अधिक मुग्ध होते हैं।

बंगाल की पहेली अपनी अर्थ लय, तुक, छंद तथा अनुप्रास से युक्त होने के कारण व्यापक से व्यापक धरातल पर प्रचलित होती जाती हैं। लय को यदि पहेलियों का प्राण कहे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

लय : हमारा सांसारिक जीवन यदि लयपूर्ण हो तो एक प्रकार के रस का अनुभव होता है। प्राचीन काल से ही मनुष्य अपनी विशेष शब्द विधाओं द्वारा एक प्रकार के लय का समावेश करता आया है। शब्द में जो लय होता है वह इस जगत् के प्राकृतिक लय के साथ संबद्ध होता हुआ प्राण सामंजस्य स्थापित करता है। यद्यपि लय की परिभाषा देना अत्यंत कठिन है फिर भी लय की कामचलाऊ परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है - - -

(1) "एक विशिष्ट प्रकार की अविच्छिन्न प्रवाहमान नियमित धुनलहरी

या ध्वनिसमूह को लय की संज्ञा दी गई है।

(डा० पुन्नुलाल शुक्ल - मुक्त छंदों का विश्लेषण - हिन्दी अनुशीलन

वर्ष - 4, अंक 3)

(2) 'लय एक सुनिश्चित गति का परिणाम है वह तुकबद्ध या

तुकमुक्त भी हो सकता है।'

तुक मुक्त पहेलियाँ :

बंगला

डाल नेई, पाता नेई

तौबु गाछ बाड़े (चीआ)

तुक युक्त पहेली :

बंगला में अधिकतर पहेलियाँ तुकयुक्त तथा लय से पूर्ण होती हैं। अन्त्यानुप्रास की झलक निम्न पहेली में देखिए - -

(1) पाखा नाई उड़े जाय, मुख नाई डाके

चोख बैटे आलो झुटे घुटे, कान काटे डाकि (मेघ)

(2) आगे परे माटि जल

जेने रेखो कौशल (कायदा)

(3) आमार माथे गल्पों शुरु

आमार माथे दिनेर शुरु (मोरग)

तुकों की कड़ी से युक्त पहेलियों को भी देखिये :

बंगला में अनेक पहेलियाँ ऐसी हैं जिसमें समान धर्म वाले कथनों

की तुकांत अभिव्यक्ति होती है।

रोहस्या रोहस्या
ढिल मारलाम कहस्या
गाछेर फल पाके रहलो
बोटा आईलो बहस्या (ताला, चाबी)

छन्द :

बंगला में कुछ पहेलियाँ छंदों से पूर्ण होती हैं। कुछ पहेलियों में बारह मात्राएं कुछ में तेरह तथा कुछ पहेलियों में नौ मात्राएं भी मिलती हैं। बंगला में सोलह मात्राओं की पहेलियों की अधिकता है।

संवादात्मक पहेलियाँ :

बंगाल में कुछ पहेलियाँ संवादात्मक शैली में भी मिलती हैं। उदाहरण नीचे प्रस्तुत है :

कि हे जेठाई भालो आछो?
ना, कि बोलबो भाई दुःखेर कथा
तोमार गेलो टाकाटा
आमार गेलो नाकटा (दुई ससुर)

अलंकार :

कुछ पहेलियों में अलंकारों का प्रयोग होता है। पहेलियों की दृष्टि से सबसे प्रभावशाली अलंकार अन्त्यानुप्रास ही है।

धामेर मतो पा गुलि बड़ो पाता

फल धरे थरे थरे केते बहो मिठा (कला)

जैसे इस बंगला पहेली में उपमा अलंकार है क्योंकि केले की वृक्ष की तुलना थम्बे के साथ की गई है। केले के वृक्ष का तना थंबे की तरह मोटा होता है। इसलिये उसकी तुलना थंबे के साथ की गई है।

उद्देश्य - विधेय :

कुछ पहेलियों में संक्षिप्तता लाने के लिये उद्देश्य या विधेय भी प्राप्त होता है अर्थात् हमें ऐसी पहेलियों के सुनते ही झट मतलब समझ में आ जाती है क्योंकि इस का उत्तर पहेली में ही छिपा रहता है।

भाषा और शैली :

निष्कर्ष रूप में यह कहा जाता है कि कोई भी साहित्यिक कृति क्यों न हो उसमें भाषा और शैली की बहुत आवश्यकता है। सुंदर भाषा और सुंदर शैली से ही काव्य की महिमा बढ़ती है। प्रत्येक साहित्यकार की अपनी अपनी शैली होती है जिसे पढ़ते ही हम तुरंत यह कह सकते हैं कि यह किस लेखक द्वारा लिखा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक साहित्यिक कृति के लिये भाषा तथा शैली का महत्वपूर्ण स्थान है।

x//x x//x x//x

अष्टम अध्याय
निष्कर्ष

अष्टम अध्याय

निष्कर्ष

बँगला पहेलियों का महत्व :

सभी विषय अपने में कुछ न कुछ महत्व लिये रहते हैं तभी उसके पढ़ने तथा जानने में सार्थकता है। अगर प्रत्येक विषय में मानलिजिये कि कोई महत्व नहीं है तो हम उन्हें छूते तक नहीं। जीवन के क्षेत्र में उस विषय का कुछ न कुछ प्रयोजन अवश्य होता है। इसी तरह बँगला पहेलियों में भी कुछ न कुछ महत्व जरुर है। जैसे - - -

अ) ऐतिहासिक महत्व

आ) भौगोलिक महत्व

इ) आर्थिक महत्व

ई) व्यैयक्तिक महत्व

उ) सामाजिक महत्व

ऊ) धार्मिक महत्व तथा

ए) भाषा संबंधी महत्व

अ) ऐतिहासिक महत्व :

बँगाल की पहेलियों में इतिहास की प्रचुर सामग्री मिलती है। इसमें पौराणिक उपाख्यानों की ओर संकेत भी पाया जाता है। बँगाल की एक पहेली जो कि हिन्दी में अनुवाद की गई है देखिये :

श्याम वरण मुख उज्जर किये
रावण सीस मन्दोदरि जिते
हनुमान पिता कारी ले हों
तब राम पिता भरि देहों।

आ) भौगोलिक महत्व :

इन पहेलियों में भूगोल संबंधी विषयों का उल्लेख होता है। इससे हमारी ज्ञान की वृद्धि होती है तथा जिन प्रदेशों, नगरों, उपवनों के नाम हमें नहीं मालूम बंगाल की पहेलियों का अध्ययन करने से वह हमें मालूम होता है।

इ) आर्थिक महत्व

इन पहेलियों में जनजीवन के अर्थिक पक्ष की झांकी भी मिलती है। प्राचीन काल में लोग अपनी आर्थिक समस्याओं को किस तरह से सुलझाते थे उन सभी का वर्णन इसमें मिलता है। उस समय जनजीवन में आर्थिक समस्या एक प्रकार से थी ही नहीं तभी तो सोने की कटोरी तथा सोने के थाल का वर्णन इन पहेलियोंमें मिलता है।

ई) वैयक्तिक महत्व :

बंगाल की कुछ पहेलियाँ ऐसी भी है जो अपना वैयक्तिक महत्व लिये रहती हैं अर्थात् समाज को उससे कुछ लाभ नहीं भी हो सकता है वह उसमें वैयक्तिक महत्व निहित रहता है। कुछ नामों को मनुष्य रख लेते है जिसका कोई अर्थ नहीं निकलता है फिर लोग उन नामों

को रखते है क्योंकि उससे उनको व्यक्तिगत आनन्द या शांति मिलती है।

उ) सामाजिक महत्व :

पहेलियों में लोकजीवन का चित्रण होता है इनमें जन जीवन का सच्चा वर्णन भी मिलता है। दियासलाई के वर्णन में सामाजिकता का दर्शन हमें प्राप्त होता है। पुलिस, बस, इलेक्ट्रिक बल्ब, स्टीम आदि अनेक अंग्रेजी शब्दों का उल्लेख प्राप्त होते हैं।

ऊ) धार्मिक महत्व :

लोक के जनता की आस्था धर्म के प्रति होती है। उर्वशी, चन्द्र, सूरज, नक्षत्र, अग्नि आदि देवताओं का उल्लेख भी बंगाल की पहेलियों में मिलता है।

ए) भाषा संबंधी महत्व :

भाषा संबंधी विवेचन भी इन पहेलियों में होता है। यह संतरण शील साहित्य होने के कारण युग की माँग के अनुसार पहेलियाँ होती है।

बंगाल की पहेलियाँ मनोविनोद और मनोविकास के साधन है। यह मौखिक संपत्ति बंगाल प्रांत में अभी तक छिन्नावस्था में जीवित है। अतः प्राप्य सामग्री का संकलन करके सुरक्षित रखना हरएक लोक साहित्य प्रेमी का परम कर्तव्य है।

//::// x //:://
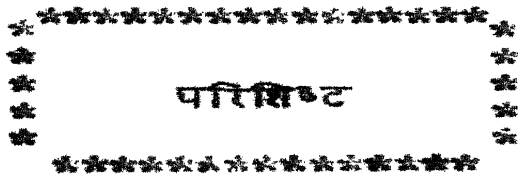
परिशिष्ट

परिशिष्ट (अ)

बंगला - पहेलियों का लिप्यंतर सहित हिन्दी में अनुवाद - -

(1) आमार साथे गल्पो शुरु
आमार डाके दिनेर शुरु। (मोरग)

मेरे साथ कहानी का आरंभ
मेरी बोल पर दिन का आरंभ। (मुर्गा)

(2) आता आला आता
पृथ्वी मोध्ये दुइटि पाता। (चंद्र, सूर्जो)

आता आता आता
पृथ्वी के बीच में दो पत्ते। (चन्द्र, सूर्य)

(3) आल्लार की कुदरत
कठिर मोध्ये शरबत। (आँब)

अल्लाह की कुदरत
डंडे के बीच में शरबत। (आँब)

(4) आमि बोलि पाखी, तोराओ बोलिस ताई
किन्तु सबेर शेषे, कोरले माना जल फुरिये जाय।
(शुकनी)

मैं बोली पखी, तुम भी बोलो वैसी

पर सब के अन्त में करने से मना (सुखा)

पानी खतम् हो जाय ।

(5) आगे पीछे जाओना

सोरिवारे चाओना । (जालोना)

आगे पीछे जाओन

सहना चाहोन । (यातना)

(6) आदि अन्तो बाद दिये

माभि अस्त्रों दाओ

सागोर पेरिये तुमि

बोहुदूरे जाओ ।

आदि अंत छोड़कर

बीच में अस्त्र देती हो (बागदाद)

सागर पार कर

बहुत दूर जाती हो।

(7) आगे परे माटि जल

जेने रेखो कौशल । (कादा)

आगे पीछे मिट्टी पानी

जान लो भाई कौशल। (कादा)

(8) ऊँचु देखे भय पाई

बुझि नीचु स्थान

निजेर देहो बोलि दिये

बाँचाई सबार प्राण । (जल)

ऊँचाई देखकर डरता हूँ

दौड़ती हूँ नीचे की ओर (पानी)

अपने प्राण का बलि देकर

बचाता हूँ सबका प्राण ।

(9) ऊपरे पाता नीचे पाता, पाता झन् झन् करे

वृन्दावने आगुन लेगेछे, के निभाते पारे । (रोद)

ऊपर पत्ता नीचे पत्ता, झन् झप् करती है

वृन्दावन में आग लगी है, कौन बुझा सकता है । (धूप)

(10) ऊपरे माटि नीचे माटि

चोलछे जेनी बाबुर बेटाटि । (ईंदुर)

ऊपर मिट्टी नीचे मिट्टी

चलती है जैसे बाबू की बेटी । (चूही)

(11) ऐकदिने जन्मो होईलों, भौगिनी दुईजन

माओ आछे बाप नाई, विषालार गठोन (पयोधर)

दुई कन्यार ऐक नाम, ऐक जायगाय घर

शिशुकाल हैते कापोड़, माथार ऊपर ।

एक दिन में जन्म हुआ, बहन दो जन

माँ भी है, पिता नहीं, विधाता की सृष्टि (पयोधर)

दो बहनों का एक ही नाम, एक जगह में घर

बचपन से ही सिर पर ओढ़नी।

(12) ऐतोटुकु पानी

ना शुकोते जानि । (जीभ)

थोड़ा सा पानी

सूखना न जाना । (जीभ)

(13) ऐकटा मरा निये जाच्छे

वार पा नेई, (साँप)

जे देखेछे तार माथा नाई।

एक मुर्दा ले जा रहा

जिसका पैर नहीं (साँप)

जिसने देखा है उसका

मस्तक नहीं ।

(14) ऐक आलि दुई भाई, (चोख)

काहर संगे देखा नाई ।

एक सखी दो भाई

किसी के साथ मुलाकात नहीं । (आँख)

(15) ऐकबार आसे, ऐकबार जाय

किन्तु आबार जे जाय, आर आसे ना। (दाँत)

एक बार आता, एक बार जाता,
मगर जाने पर, फिर कभी नहीं आता। (दाँत)

(16) ऐक पा जाय, आँकि मेरे चाय (घूँच, सूतों)
एक पैर जाता है, झाँक कर देखता है।(सूई - धागा)

(17) ऐक्टा घरे, सातटा दुआर। (वाँशी)
एक घर में सात दरवाजे। (बाँसुरी)

(18) ऐमोन जे कोलिकाता
पायेर तले बोसुमाता (पदमोफूल)
गलाय तार गंगा बाँधा
सूर्जोमुखी कय कथा।

ऐसा जो कलकत्ता
पैर के नीचे वसुमाता (कमल)
गले में उनके गंगा बँधा
सूर्य मुखी कहती है कथा।

(19) ऐकशो आटटि कन्या एकटि तार वर
कन्यार नाम हरिप्रिया सूल नगोर घर।
(सिगारेट खाओआ)

एकसौ आठ कन्यायें एक उनका वर
कन्या का नाम हरिप्रिया, सूला नगर में घर।
(सिगरेट पीना)

(20) ऐमोन ऐकटि जिनिष आछे

काहरु काछे पाई काहरु काछे नाई । (लज्जा)

ऐसी एक चीज हैं सभी के पास

किसी के पास मिलती है किसी के पास नहीं ।(लज्जा)

(21) ऐकटु पानि डाले

केष्टो ठाकुर दोले । (बैगुन)

छोटी सी डाली में

कृष्ण भगवान झूले । (बैंगन)

(22) ऐक हाथीर दुई माथा

जाय हाथी कोलिकाता । (नौका)

एक हाथी का दो मस्तक

हाथी जाती है कलकत्ता । (नाव)

(23) ऐतोटुकु डाले

बोष्टम दोले । (आम)

छोटी सी डाली में

वैष्णवी डोले । (आम)

(24) ऐकटा माथा तार सहस्रो हाथ । (गाछ)

एक मस्तक उसके हजारों हाथ । (पेड़)

(25) ऐक हाथ गाछटि

फूल तार पाचटि । (आँगुल)

एक हाथ का वृक्ष

फूल उनमें पाँच । (अँगुली)

(26) ऐक नौका सुपारि

गुनिते ना पारि । (तारा)

एक नाव सुपाड़ी

गिन नहीं पाती । (तारें)

(27) ऐक जनीमें दुबार मरोन

तार बापेर उल्टा दिके जनीम । (कर्ण)

एक जनम में दो बार मृत्यु

उसके बाप का उल्टी तरफ जन्म । (कर्ण) महाभारत का

(28) ओबिरत पैलकि लाहा

उल्टे शिरे लागाय जाहा । (पलोक)

अविराम गिरती जो

उल्ट कर सिर में लगती वह । (पलक)

(29) कोचिते कापोड़ ^परा^ जुबाय उलंगो

कहेन् कोबि कालिदास, भीतरे सुरंगो । (बासि)

बचपन में कपड़ा पहने, युवा में नंगा रहें

कहते है कवि कालिदास अन्दर में सुरंग । (बांस)

(30) कौन ड्राईभार गाड़ी चालाय ना? (स्कु - ड्राईभार)

कौन ड्राईभार गाड़ी नहीं चलाता? (स्कू - ड्राईभर)

(31) कौन फलेर बीज नाई ? (कला)

कौन से फल में बीज नहीं ? (केला)

(32) कौन नारि दर्शने पुण्य हय औति

आलिंगने मोक्ष लाभ शास्त्र भारोति

चुम्बन करिले हय पवित्र जीवन

हेनो कोनो नारी आछे जगोते ऐमोन। (गंगानदी)

कौन नारी के दर्शन से पुण्य होवे

आलिंगन से मोक्ष लाभ, शास्त्र में भारती

चुम्बन करने से बनता पवित्र जीवन

कौन नारी है? पृथ्वी में ऐसी? । (गंगानदी)

(33) कौन पाखी ओड़ेना ? (उटपाखी)

कौन पन्छी उड़ता नहीं? (उष्ट्रपक्षी)

(34) कौ दुटि मिले

बेचा केना चले। (दोकान)

कौं दो मिलकर

बेचना, खरीदना चलता है। (दुकान)

(35) कौन देशे लाइट नाई? (सान लाइट साबान)

कि किस देश में लाईट नहीं? (सान्लाईट साबुन)

(36) खाबार नय तीबु खाय

पेट काटले अत्सो पाय । (कसम)

खाना नहीं फिर भी

खाते है सब लोग हरदम । (कसम)

(37) खायभार भार खागेना । (चौंटि)

खाती है भाड़ भाड़ खगती नही । (खसियाँ)

(38) खाईआर जिनिष नय अनेकेई खाय

बुध्दे खाश्ले तबे करे हाय हाय (आघात खाओआ)

युबके खाश्ले चाय एधार ओधार

शिशु खाश्लि नेत्रे तार बहे अश्रुधार ।

खाने की चीज नहीं सभी कोई खाये (गिर पडना)

वृध्द के खाने पर करती है हाय हाय

युवक के खाने पर देखता है इधर उधर

शिशु के खाने पर नेत्र से बहे अश्रुधार ।

(39) खेलते खोलि जेई

पेले दौड़ सेई । (खेलना)

खेलने खोली जैसे

मिला दौड़ी वैसे । (खिलौना)

(40) गाछेते जन्मों ताहार, वृध्दे सादा हय

न्याक्डा दिये तेरी करे, देय माथार तलाय । (तकिया)

((41) गमीनकी जबीन

वाई निये विश्री तसीन । (जाकेताई)

जाती है जब

उसे लेकर बुरी तब । (फालतू चीज)

(42) गाबे पाबे दिलाम लौमाय मत्री

माबि बाने जल अयौबा जंत्री । (बाक्ल)

पेड़ पर मिले, तुम्हे दिया मंत्र

बीच में पानी या यंत्र । (वल्कल)

(43) गा काटले जलौमय

पत्रे पुष्पे भरा रय । (बागान)

बदन काटने पर पानी निकले

फूल, फलों से भरा रहे । (बगीचा)

(44) गुल्दु बाबुर पा धोओआ जल सबाई खाय । (सिल - नोड़ा)

गुल्दु बाबू का पैर धुला पानी

सभी कोई पीता है । (सिल -

(45) घरे गेलि दिस बा ना दिस

बाईरे गेलि दिस । (घोमटा)

घर में जाने पर दो या न दो

बाहर जाने से जरुर दो ।   (घूंघट)

(46) घरैर भितर घर
     नाचै कोने बर ।   (मशारि)

     घर के अन्दर घर
     नाचै दुलहा दुलहन ।   (मच्छर दानि)

(47) घस् घस् घसका   (कृषक औ दुई बलीद)
     तिनदा माथा ढशटा पा ।

     घस् घस् घस का   (किसान और उनके दो
     तीन मस्तक दस पैर है उनका ।   बैल)

(48) घुरिफिरि जुध्दोकोरि मोरिबार भये
     ना छुले से मरेना, छूले से मरे
     बलो है पंडिते पांचशो बछोर धोरे । (कबड्डी खेला) या
                            (हा - डु - डु खेला)

     घूमती फिरती युध्द करता हूं मरने के डर से
     नहीं छूने से वह मरता नहीं छूने से मरता है
     बताओं तो पंडित जी, पांच सौ साल से ।
                            (कबड्डी का खेल)

(49) चारोण शाङ्गा चार बाहीन
     चारोण होये नराधम ।   (पाशोर्ड)

चरण बिना किसका बाहन

चरण रहित नराधम् । (पाखंड)

(50) चलरे आगे थाम पिछने

काजटा आमार खूब गोपने । (चर)

आगे चलो पीछे थमों

काम मेरा अत्यंत गोपनीय है । (चर)

(51) चले अथीच नड़ैना (घीड़ी)

चलती है मगर हिलती नहीं । (घड़ी)

(52) चार्इलाम दिलोना

तीबु बले बाकी । (देना)

माँगने से नही दिया

फिर भी कहे बाकी । (उधार)

(53) चार पायरार चार रङ

बोपे गेले एकटि रङ । (पान)

चार कबूतर का चार रंग

घर में जाने पर एक ही रंग । (पान)

(54) चारटे घरा अपुर ... रा

तार मिलरे मोधु पोरा । (गोरुर बाँट)

चार घड़ा उल्टा किया

उसके अन्दर मधु भरा रहा । (गाय का थन)

(55) चुन बयेर बाटा पान

स्त्री पुरुषेर बार्शटा कान । (रावेन, मन्दोदरि)

चूना, कथ्था, पान दान और पान

स्त्री पुरुष के बाईस कान । (रावण, मन्दोदरी)

(56) छ पाये आसे

चार पाये बसे

दु पाये पसे । (माचि)

छै पैर से आती है

चार पैर से बैठती है

दो पैर से घिसती है । (मक्खी)

(57) छोटो बेलाय खेलेकि, दुलेकि कापोड़ पोरेछि

बड़ो होये न्यांटा होये बाजारे गेछि । (केतुल)

बचपन में खेली, डोली और कपड़ा पहनी थी

बड़ा होने पर नंगा होकर, बाजार गई थी । (केमली)

(58) छोटो बेला चार पाव

जोआन होइले दुई पाव

बुड़ा होइले तीन पाव

की कथो देखि? (मनुष्य)

बचपन में चार पैर

जवान होने पर दो पैर

बुढापे में तीन पैर

बताओ तो क्या? (आदमी)

(59) कार्ई भिन्नीं शोवेना

लाथि बिना ओटेना । (कुकुर)

लात बिना न सोये

लात बिना न उठे । (कुत्ता)

(60) जनीनि, नूतन साजे, ऐसेछे मानुष सेजे।(मानोब)

जमनी नये साज में, आये हैं मानव बनकर।(मानव)

(61) जन्मो दिये बाप पालिये

माँ होलो व नोवासी (कोकिल)

जार छेले तार होलो

गालो खेलो पाड़ा परोसी ।

जनम देकर बाप भाग

माँ हुआ वनवासी

जसका लड़का उसका हुआ

गाली खाये पड़ोसी । (कोयल)

(62) जलेर परे नोंगरा जिनिष

जलेर थेके निये आसिस । (कमोल)

पानी के उपर गन्दी चीज

पानी से ले आती हो । (कमल)

(63) जले जन्मों थले बास
जलेते गेले सर्बनाश । (लबन)

जल में जन्म थल में बास
जल में जाने से सर्वनाश । (नमक)

(64) जल नार्ं बाले किले
जल आके गाछेर डाले । (नारिकेल)

पानी नहीं तालाब में
पानी है पेड़ की डाल में। (नारियल)

(65) जनीनि जान जलोजाने
पत्रे पुष्पे शोभा आने । (मालींच)

जननी जाती जलयान से
पत्र पुष्प में शोभा लाती। (फूलों की प्यारी)

(66) जन्तु दानोब शुचि बड़ो
शुकिये तारे पुरिये मारो । (गोमय)

जन्तु, दानव बहुत पवित्र
छूने पर जलाकर मारो । (गोबर का कंडा)

(67) जा निये भाई जाबो परे
र - की देखि हैबे (जाजाबर)

थाल्बों ना आर चोलेई जाबो
पुरबो देशे देशे ।

जो लेकर भाई जायेंगे, दूर देश में
रहती हो शेष में
रहूंगा नहीं चले जाऊंगा
घूमूंगा देश देश में । (यायावर)

(68) जाब्किस तो दिये जास । (दरोजा)

जाती हो तो देकर जाना । (दरवाजा)

(69) झाकरा झोकरा गाछटि
फल धरे बारोटि
पाक्ले हय ऐकटि । (बछर)

बड़ा सा वृक्ष
फल लगती है बारह
पकने पर एक । (एक साल)

(70) तारे बाई सबे भाई ऐड़ाते
माथा रेखे चलो सेथा बेड़ाते । (झामेला)

सभी कोई उन्हें छोड़ना चाहे
सिर रख कर वहां घूम आये ।

(71) तिने मिले छोदुर भैबेके जाबा
ग्रीष्मिटा बाद दिले छोति नाई ताहा । (त्रिदेव)

तीनों के मिलाने से बहुत दूर होती है जो

पहले के छोड़ने पर नजदीक वह । (विदेश)

(72) तिनटे आगे सबटा शेषे

खुजले पाबे भारोत माझे । (त्रिपुरा)

तीन आगे सबसे अंत में

खोजने पर भारत बीच में । (त्रिपुरा)

(73) तारे छाड़ा कारो नाहि चले

अथोबा जंत्रीना पेले । (रात्रि)

उसे बिना किसी को नहीं चले

या यंत्रणा मिले । (रात्रि)

(74) तोमार शुरु आमार सारा

अन्धोकारेई दिशेहारा । (तम)

तुम्हारा शुरु मेरा अंत

अंधकार में ही है - सहारा । (तम या अंधकार)

(75) तुमिओ खाओ- आमिओ खाई

मुख बाड़ालेई पाई (चुमु खाओआ)

जतोई खाई, पेट ना भरे

मोरि, एकि बालाई ।

तुम भी खाती हो, मैं भी खाती हूँ

मुँह बढ़ाने पर मिलता है (चूमना)

जितना भी खाओ पेट न भरे

यह क्या मुसीबत है।

(76) तुमिओ खाओ आमिओ खाई

बेले बोलते रेगे जाई। (केला)

तुम भी खाते हो, मैं भी खाती हूँ

खाओ कहने पर गुस्सा हो जाते हो। (केला)

(77) तीन अक्षौरे नाम तार

चोख नियै तार कारबार। (चशमा)

तीन अक्षर है, नाम उनका

आँखों से कारोबार उनका। (चशमा)

(78) तीन अक्षौरे नाम पर तार सर्बलोके बेले

प्रोथोम अक्षौर केड़े दिले सक्लोके बेले

मोध्यम अक्षौर केड़े दिले, रास्ताते दौड़ाय। (पबोन)

तीन अक्षर से नाम बनता सभी लोग में बेलती है

पहला अक्षर छोड़ने पर सभी लोग बेलते है

मध्य अक्षर छोड़ने पर, रास्ते में दौड़ती है। (पवन)

(79) ताके घिरे नि

माथा केटे हाते दि। (निताई)

उसे घेर लिया सिर (नै) (नि=नदी, ताई = ताली

काटकर हाथ में दिया। अर्थात् भजन करना)

(80) ~~लोक~~ तरोआतदे झिलिमिली

बनके बादार (गोरु ओ वृषक)

तीन माथा दश पा

देखेछो की कोथा ?

तलवार की झिल मिल

वन - उपवन में

तीन मस्तक दस पैर

देखा है कहीं? (गाय और वृषक)

(81) थाकते घरे आपोन स्वामी

भागनेर प्रेमे मोजली मामी । (राधा)

अपना स्वामी रहते हुये भी

बहनोई के प्रेम में पागल बनी। (राधा)

(82) दशमाथा दशानन नहे तो राबोन (झिंगे)

काइट्या कुइट्या करे तारे सुन्दोर व्यंजोन ।

दसमस्तक दसआनन नहीं है रावण

काट कूट कर बनता है सुंदर व्यंजन । (तरोई)

(83) देब भोग्य लोस्तु जोदि, आटखानिदाओ

प्रोसाद तो दूरेर क्था, किछु नाहि पाओ । (अष्टोरंभा)

देवता के खाने लायक चीज यदि आठ दो

प्रसाद तो दूर की बात कुछ नहीं मिले। (बेवकूफ)

(84) दल बँधे ताके घिरे

रसातले जाओ। (पाताल)

दल बाँधे उन्हे घेरे

रसातल में जाओ। (पाताल)

(85) न - टि पेले ठिक न - टिर परे

तिनटाइ पेले तुमि, निजे दुटि कौरे। (नयोन)

नौ मिले ठीक नौ के बाद

तीनों ही मिले तुम्हे खुद दो दो कर के। (नयन)

(86) पाखा नाई उड़े जाय, मुख नाई डाके

चोख केटे आलो छुटे कान काटे डाके। (मेघ)

पंख नहीं उड़ जाती है, मुँह नहीं फिर भी बोले

आँख भेदकर रोशनी छूटती है, कान फटती है आवाज से।

(मेघ)

(87) पाहोड़ेर दुधारे दुभाई

देखा देखि नाई (कान)

पहाड़ के दो किनारों पर दो भाई

मुलाकात नहीं हुई। (कान)

(88) पाहाड़ेर उपरे कुडुल चले। (चिरुनी)

पहाड़ के उपर कुल्हाड़ी चले। (कंघी)

(89) पेट काटले गंधो छोटे

ना काटले निजेई छोटे। (बातास)

पेट काटने पर गन्ध छूटे

न काटने पर खुद ही छूटे। (पवन)

(90) पादोदेरै आग नोबु

मस्तोके आकाश (बढ़म्)

मुख काटि चाले दिई

बोरिनु प्रोकाश।

पैर तले निवास

उपर आकाश (बलाउ)

मुंह काटकर जलपर दी

करती हूँ प्रकाश।

(91) पोशु आमि नोहि दानोब

अथोबा मानोब

कोंगी तो आमि के?

पशु मैं नही दानव

या मानव

बताओ तो मैं कौन हूँ? (चिम्पांजी)

(92) प्रीति दिबसेर माझे ओभिशाप बर्षे

दिनाति हेरिआ ताय मोन भरे हरषें। (निशापीति)

प्रति दिवस दे बीच अभिशाप वासे
दिनांत में देख उसे मन हारे। (निशापति)

(93) पानीय नय
शर्यों क्य । (चाना)

पानीय नहीं
फसल कहते हैं । (चना)

(94) पेटेर भितर पानी तार उपरे माथा (हैरिकेन)

पेट के अंदर पानी, उसके ऊपर सिर। (लालटेन)

(95) पथ वेये वेये जाय
फिरे फिरे चाय । (शिआल)

पथ पर चलते चलते
पीछे मुड़ मुड़ देखे। (सियार)

(96) पूब थेके ऐलो हाती बड़ो बड़ो कान
मुख दिये केले बोलो शुनरे भगोवान। (कला पाता)

पूरब से आया हाथी, उसके बड़े बड़े कान
मुँह से लड़का हुआ सुनों हे भगवान। (केले का पत्ता)

(97) पीरते गेलेई कांदाकाटि
भितोरे गेलेई हासि । (चुड़ि परानों)

पहनते वक्त रोना धोना
अन्दर जाने पर खुशी । (चुड़ी पहनना)

(98) प्रोबादे गाछेर गुड़ि
बिराट थाक्य पुरोपुरि।		(प्रोवांठो)
प्रवाद में वृक्ष का तना
बड़ा रहने पर पूरा।		(बहुत बड़ा)

(99) पाँच सात विशेषने
पेट लेज केटे रोई
समुद्रे जनोम मोर
गभीर अरोण्ये रोई।		(बारौन)
पाँच सात विशेषण सहित
पेट, पूछ कटी रहती हूँ
समुद्र में जन्म मेरा
गभीर जंगल में निवास करती हूँ।		(मना)

(100) पेट आछे नाड़ि नाई
चोख आछे तार नाक नाई।		(आनारस)
पेट है नाड़ी नहीं
आँख है नाक नहीं।		(अनन्नास)

(101) पक्षी ऐक अर्थे शतेक		(धनेश)
पक्षी एक अर्थ में सौ।		(धनेश पक्षी)

(102) पुण्डी साथ सुख पाबो
शुन्ये अंधाकार		(पकैट)
हुबाइ चित्रों माझे
के देखो आकार।

(103) पूब दिकेर गाछटा
फल धोरेछे ऐकटा । (सूर्जी)

पूरब दिशा का वृक्ष
फल धरती है एक । (सूर्य)

(104) पा नयकी माँ साथी
माके छेड़े जले भासि । (पानामा)

पैर नहीं माँ साथी
माँ को छोड़कर पानी में तैरती । (एक प्रकार का पौधा पनामा)

(105) पिता जन्मीं दिलो बटे
माँ छिलो ना काछे
भूमिते उत्पन्नीं किन्तु
नाहि फल गाछे । (सीता)

पिता ने जन्म दिया फिर भी
माँ नहीं थी पास में
भूमि में उत्पन्न फिर भी
फल नहीं है वृक्ष में । (सीता)

(106) फल आछे तार फूल नाई । (आलू)

फल है उनमें, फूल नहीं । (आलू)

(107) वन थेके बेरोलो हाथि
हाति करो आमि महोलोकेर पाते मुलि । (लेबु)

वन से निकला हाथी
हाथी बोले मैं भद्र आमियों के
पात में मूर्तात हूं।　　　　　(नींबू)

(108) बोत्रिशटा गाके रैकटा पाता　　　　(जीभ)
बत्रिस पेड़ों में एक पत्ता ।　　　　(जीभ)

(109) बैठा मलता ।　　　　(बीड़ी)
बैठकर मलता ।

(110) बोलि तुमि चाओ
बिना मूल्ये पाओ ।　　　　(भालोबासा)
कहती तुम माँगती हो
बिना मूल्य हो पाती हो ।　　　　(प्यार)

(111) बिदुषी नारीर पेटे, रैखेछि तुई पा
पेट्टा तोर केटे दिलाम जले भेसे जा । (पाबना)
विदुषी नारी के पेट में रखती है तू पैर
पेट तेरा काट डाला, पानी में बहे जा । (पंख)

(112) बोलछि पाखी दिच्छेना
जोन्तु बोटा पाखी ना ।
बोलता पखी, देती नहीं
जानवर वह, पखी नहीं ।　　　　(बकना)

(113) कौन थेटे बेल्लो बाघ

बाधेर गाये मोरिर दाग। (काठबिड़ाली)

वन से निकला बाघ

उसके शरीर पर ऊंठ की दाग। (गिलहरी)

(114) भाई, भातारि, कौन नारि

छिली धारातले (अर्जुन - सुभद्रा)

र सवाई लोक

सती बले तारे।

भाई, भातारिकौन नारी थी

धरातल में (अर्जुन - सुभद्रा)

पृथ्वी के सभी लोग

सती कहे उन्हे।

(115) भौं भौं करे भौमरा नोई

गलाय पैतै बामुन नोई। (चरखा)

भौं भौं करती, भौरा नही

गले में जनेऊ, ब्राह्मण भी नही,। (चरखा)

(116) भाँड पल्ली कोरछे लड़ाई। (सग्राम)

गाँव भर करती है लड़ाई। (सग्राम)

(117) भिन्नीं फ्रोवार

पिता मातार। (नाना)

भिन्न प्रकार

माता पिता का।　　　　　(विभिन्न)

(118) मन्दी आमार, बलि बाटि
मूलधन तार, होलो माटि।　　　　　(कुमोर)

कू मेरी वल सब्बी
मूलधन उसका है मिट्टी।　　　　　(कुम्हार)

(119) माया बैये हाल धरी
पेट कैटे गन्ठा करी।　　　　　(चाकोर)

माया बाहर हात पकड़ी
पेट काटकर गिनती करी।　　　　　(नौकर)

(120) मायेरी मामा, बाबारो मामा के?　　　　　(चांद)

माका भी मामा, पिताजी का भी मामा कौन?　　　　　(चांद)

(121) माष्टारमशाई, माष्टारमशाई
गुली देशे देश　　　　　(औषध)
ऐकटि गाछे ऐकटि फल
देखेछो कोन देश?

मास्टर साहब, मास्टरसाहब गोली
देश देश में
एक पेड़ में एक फल
देखा किस देश में?

(122) मामादेर गड़ाने घाट

बौत्रिशटि कलागाध

ऐक्खानि पात। (मुख, जिह्वा, दाँत)

मामाओं का घाट

बत्तीस केलाओं के वृक्ष

एक ही पत्ता। (मुख, जिह्वा, दाँत)

(123) माँ आज नय

की फल कय? (माकाल)

माँ आज नहीं

क्या फल है? (विंबाफल)

(124) माटि बैसे चले सदा

मायाते आकाश (साप)

उत्तोर बले तो सबे

दिलाम आभास।

मिट्टी बूकर चले सदा

मस्तक पर आकाश (साँप)

बताओ तो क्या चीज है?

दिया आभास।

(125) मुँडविनेर, मुण्डटिरे सकोलेरई चाई

आजीब धाधार जबाबटि भाई जोलदि जैनो पाई। (कबीध)

मुण्डहीन का मुण्ड सभी को चाहिये
अजब पहेली का जवाब जल्दी मुझे चाहिये।
(कबीध या कगरबंध)

(126) मामा बले माँ
बाबा बले माँ
माँ बले माँ
बेले औ मेये बरे माँ (कालीमाता)
ए आबार होलो कि?

मामा बोले माँ
पिता बोले माँ
माँ बोले माँ
लड़का बोला माँ (कालीमाता)
ये क्या हुआ?

(127) राजा से आदो नय
तोबु नरोपति। (प्रोजापति)

राजा तब भी नहीं
फिर भी नरों का पति। (तितली)

(128) लम्बा सादा हेचोटि तार
माथाय टिकि रय
टिकिर भीतर आगुन दिले

देहोटि हय बय । (मोमबत्ति)

लम्बा सफेद देह उनका

सिर में टिकिया रहती है

टिकिया में आग लगने पर

देह क्षय होती है। (मोमबत्ती)

(129) लेजकाटा बिबिरे

नाना रंग देखिरे। (प्राचीन मास)

पूंछ कटी बीबी की

नाना रंग देखती हूँ। (सावन)

(130) लेज कैटे निले

माथा खाना कैटे बासा। (निलय)

पूंछ माथा काटकर

बना हुआ घर। (निलय-घर या आवास)

(131) लालकुचि ना बाबागो। (लंका)

लाल मिर्च नहीं बाबा। (मिर्च)

(132) लता लता दुबदि लता - पा

तार उपरे बाबार जाला - पेट

तार उपरे बाबो कि? - मुख

तार उपरे मिटिर मिटिर - चोख

तार उपरे गहिर माठ - क्पाल

तार उपरे दुर्बा घास - चुल ।

लता लता दो लतायें - पैर

उसके ऊपर खाने का घड़ा - पेट

उसके ऊपर खायेंगे क्या? - मुँह

उसके ऊपर अधखुले - चक्षु

उसके ऊपर खेल का मैदान - कपाल

उसके ऊपर दुर्बाघास - बाल

(133) लेजकाटा खिखिरे

नाना रूप देखिरे। (बयेंग)

पूँछ कटी बीबी की

नाना रूप देखती हूँ। (मेंढक)

(134) लोके बले असोत् काज

आमि बोलि चतुस्पद। (पाचार)

लोग कहे असत् काम

मैं कहती हूँ चतुस्पद। (चोरी)

(135) शुरु शेष अर्धोबा ना

सबार मोने आछे ता। (बासोना)

शुरु शेष या नहीं

सभी के मन में है वही। (बासना)

(136) शुरु सब आगे परे

लिन्टाई प्रीस करे। (कैमोन)

शुरु सब आगे पीछे

तीनों ही प्रश्न पूछे । (कैसा)

(137) शुरु शेष खेले शेष
शेष हुई होलो शेष। (विशेष)

शुरु अंत, खेल अंत
शेष हो हुआ अंत । (विशेष)

(138) शेष थाकले सबटा थाके
माझखानटा बानाय बोका। (अथौवा)

शेष रहने पर सभी रहता
बीच रहने से बेवकूफ बनता। (अथवा, या)

(139) शेष सारानो जलाशये
आगागोरा फेले काया
काया सारियेओ दाड़ाय बाड़ा
जबाब दिते सबेई माया। (देरी या विलंब)

(140) श्याम वर्णों मुख उज्ज्वल करे
रावोण शीष मन्दोदरिजिते
होनुमान पिता कालो शिखा
लखोन रामेर पिता भोरे दिलो।

श्याम वर्ण मुख उज्ज्वल किये
रावण शीष मन्दोर जीते
हनुमान पिता काली है ही (बत्ती)

तब राम पित्ता भरि देहौं ।

(141) सबटा देखते भालो

अयोबा शौनाय भालो । (बागान)

सभी देखने में सुहावना

या सुनने में लुभावना । (बगीचा)

(142) सकोल जायगाय सुकाये गैलो (नारिकेल)

मध्ये जायगाय, गाछेर आगाय जल रोलौं ।

सभी जगहों में सूख गाया

बीच की जगह पेड़ों के आगे जल रहा । (नारियल)

(143) सब खाय, जल खेले मौरे जाय । (आगुन)

सब खाती है, पानी पीने से मर जाती है । (आग)

(144) से पाखी

भूलौं नाकि? (सेवक)

वे पक्षी

नौकर नहीं? (सेवक)

(145) से नय सैन्यों मोटे

लड़ाई लोबु करे बटे । (सैन्यौं)

वह नहीं सैनिक

फिर भी लड़ाई करता है? (सेना)

(146) सबटाते थाकिष

अयोना वेटे निस । (निवास)

सब में रहती है

या बाट लेती हो । (निवास)

(147) हाटे जाय बाजारे जाय

ऐकटा कईरया थोप्पोड़ खाय । (हाण्डी)

हाट में जाती है, बाजार में जाती है

एक एक थप्पड़ खाती है । (हंडी)

(148) हाता आछे, तार माथा नाई

पेट आछे, तार नाड़ी नाई । (गाँजि)

हाथ में उसका मस्तक नही

पेट है उसकी नाड़ी नहीं । (गाँजी या वनियायिन)

(149) हाते आछे हात बाड़िये पाईना (कोनुई)

हाथ में है, पर हाथ बढ़ाने से नहीं मिले। (कोहनी)

150) बाप बाबा कि होब्लो

बिना बापे का होब्लो

का होब्लो जमीन

माँ खिलौना लबाने । (लव, कुश)

हाय बाप रे! ये का हुआ?

बिना बाप के लड़का हुआ (लव, कुश)

लड़का हुआ जब

माँ नहीं थी तब।

परिशिष्ट

सहायक ग्रंथ सुची

पुस्तक का नाम	भाषा	लेखक का नाम
	बंगला	
1. बांगलार लोक साहित्य पंचम खण्ड	भाषा	आशुतोष भट्टाचार्य
	हिन्दी	
2. (अ) कुमाऊँ का लोक साहित्य		डा० त्रिलोचन पाण्डेय
(आ) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास		प० राहुल सांकृत्यायन और डा० कृष्णदेव उपाध्याय
	तेलुगु	
3. आन्ध्र की पहेलियाँ		तेलुगु विद्यार्थिनी 1973
	मलयालम	
4. मलयालम की पहेलियाँ		तेलुगु विद्यर्थिनी 1975
	अंग्रेजी	
5. (अ) अमेरिकन् फोक्लोर		त्रिस्त्रम् कफिन्
(आ) इंडियन रिड्लिस		लुड् उईक् स्टार्न बार्न
(इ) ए सरमे आफ फोक्लोर स्टडी इन बेंगल		शंकर सेनगुप्त